॥ श्री स्वामिनारायणो विजयते ॥

सत्संग शिक्षणश्रेणी की पाठ्यपुस्तक : 3

योगीजी महाराज

लेखक

प्रो. रमेश एम. दवे

प्रकाशक

स्वामिनारायण अक्षरपीठ

शाहीबाग, अहमदाबाद - 380 004.

YOGIJI MAHARAJ (Hindi Edition)
(Life-sketch of yogiji Maharaj)

By Prof. Ramesh M. Dave

A textbook for examination prescribed under the curriculum set by Bochasanwasi Shri Akshar Purushottam Swaminarayan Sanstha.

Inspirer: HDH Pramukh Swami Maharaj

Presented by:

Bochasanwasi Shri Akshar Purushottam Swaminarayan Sanstha 'Swaminarayan Akshardham', N.H. 24, Akshardham Setu, Yamuna Kinara, New Delhi - 110 092. India.

Publishers:

SWAMINARAYAN AKSHARPITH
Shahibaug, Amdavad - 380 004. India.

-th Edition:

March 2009. Copies: --- (Total Copies: ---)

Warning:

Copyright: ©Swaminarayan Aksharpith

This book is published by Swaminarayan Aksharpith. Material from this book cannot be used without due acknowledgement to Swaminarayan Aksharpith, Shahibaug, Amdavad. For any reprints the written permission of the publishers is necessary.

ISBN:

रजूकर्ता : बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था (बी.ए.पी.एस.)
'स्वामिनारायण अक्षरधाम', नेशनल हाईवे 24, अक्षरधाम सेतु,
यमुना किनारा, नई दिल्ली - 110 092.

प्रेरणामूर्ति : प्रकट ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज

सूचना : सर्वाधिकार सुरक्षित : © स्वामिनारायण अक्षरपीठ

इस पुस्तक के अंश किसी भी स्वरूप में प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक की लिखित सम्मति अनिवार्य है।

चतुर्थ संस्करण : मार्च, 2009

प्रति : --- (कुल प्रति : ---)

मूल्य : रु. --.00

मुद्रक एवं प्रकाशक :

स्वामिनारायण अक्षरपीठ

शाहीबाग, अहमदाबाद-380 004.

॥ श्रीस्वामिनारायणो विजयते ॥

हम सभी स्वामी के बालक, मरेंगे स्वामी के लिए ।
हम सभी श्रीजी के युवक, लड़ेगे श्रीजी के लिए ॥

नहीं डरते नहीं करते, हमारी जान की परवाह ।
हमें है भय नहीं किसीसे, जन्मे हैं मृत्यु के लिए ॥

हमने है यज्ञ आरंभा, सदा बलिदान हम देंगे ।
हमारा अक्षरपुरुषोत्तम, गुणातीत गान के लिए ॥

हम सभी श्रीजी की संतान, अक्षर में वास हमारा है ।
स्वधर्मी भभूत रमाई है, अब हमें शर्म किसके लिए ॥

मिले हैं मोती-से स्वामी, हुए हम पूर्णकाम सभी ।
प्रगट पुरुषोत्तम पाये, संत से मुक्ति के लिए ॥

कृपाकथन

ब्रह्मस्वरूप स्वामीश्री योगीजी महाराज द्वारा स्थापित व पोषित युवक प्रवृज़ि तीव्र गति से विस्तृत होती जा रही है। इस प्रवृज़ि से जुड़े युवाओं की आकांक्षा तथा ज्ञानपिपासा को संतुष्ट करने तथा उन्हें भगवान स्वामिनारायण प्रबोधित अक्षरपुरुषोज़म के सिद्धांत की ओर अभिमुख करने के उद्देश्य से बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोज़म स्वामिनारायण संस्था ने क्रमबद्ध पुस्तकों के प्रकाशन का आयोजन किया है।

इन पुस्तकों द्वारा बालकों और युवाओं को व्यवस्थित, सुगम तथा सरल ढंग से सत्संग का शुद्ध ज्ञान प्राप्त होगा। भगवान स्वामिनारायण द्वारा उद्‌बोधित आदर्शों के पालन व प्रचार के लिए ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज द्वारा स्थापित यह संस्था, इस प्रकार की अनेक सत्संग प्रवृज़ियों में संलग्न है कि जिससे विश्व में हमारी महान हिन्दू संस्कृति का प्रचार व प्रसार हो।

भगवान स्वामिनारायण का दिव्य संदेश विश्व के कोने-कोने में प्रसारित हो तथा सभी मुमुक्षुओं को शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति हो इसी हेतु इन पुस्तकों का भिन्न-भिन्न भाषाओं में प्रकाशन किया गया है।

इन पुस्तिकाओं के आधार पर सत्संग शिक्षण परीक्षाएँ आयोजित की जाएँगी साथ ही बालकों-युवकों को प्रमाणपत्र देकर प्रोत्साहित किया जाएगा। इस पुस्तकों को तैयार करने में ईश्वरचरण स्वामी, रमेशभाई दवे, किशोरभाई दवे तथा अन्य सहयोगियों ने भारी परिश्रम उठाया है, उनको हमारे आशीर्वाद हैं।

शास्त्री नारायणस्वरूपदासजी (प्रमुखस्वामी महाराज)के

अत्यंत स्नेहपूर्वक

जय श्री स्वामिनारायण।

क्रमिका

1. झीणाभाई का जन्म 1
2. ध्यानमग्न झीणाभाई 2
3. निडर सत्यवज़्ता 3
4. आदर्श विद्यार्थी 5
5. समय का सदुपयोग 7
6. ठाकुरजी की सेवा 8
7. मुझे साधु बनाइये 9
8. झीणा भगत जूनागढ़ में 11
9. जागा भज़्त के दर्शन 13
10. प्रथम मिलन 14
11. मैं तो सेवक हूँ 16
12. तपस्वी झीणा भगत 17
13. कृष्णजी अदा के आशीर्वाद 19
14. निःस्पृही सन्त 21
15. मान-अपमान में समता 23
16. सेवामय सन्त 25
17. सच्चा साधु 27
18. मन्दिर की सेवा में 29
19. श्रीजी-स्वामी वश में हैं 31
20. पराभज़्ति 33
21. सर्प-दंश 34
22. अक्षर मन्दिर के महन्त 36
23. गुरुभज़्ति 37
24. शास्त्रीजी महाराज प्रकट हैं 38
25. युवक मण्डल और सत्संग सभा 40
26. युवकों के योगीराज 41
27. युवकों को दीक्षा 43
28. योगीजी महाराज का कार्य .. 45
29. अँधेरे खण्ड को उजाला दिया 49
30. स्वागत और बिदाई 51
31. योगीजी महाराज को ज़्या पसंद है ? 52
32. योगीजी महाराज का उपदेश 53
33. पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज .. 55

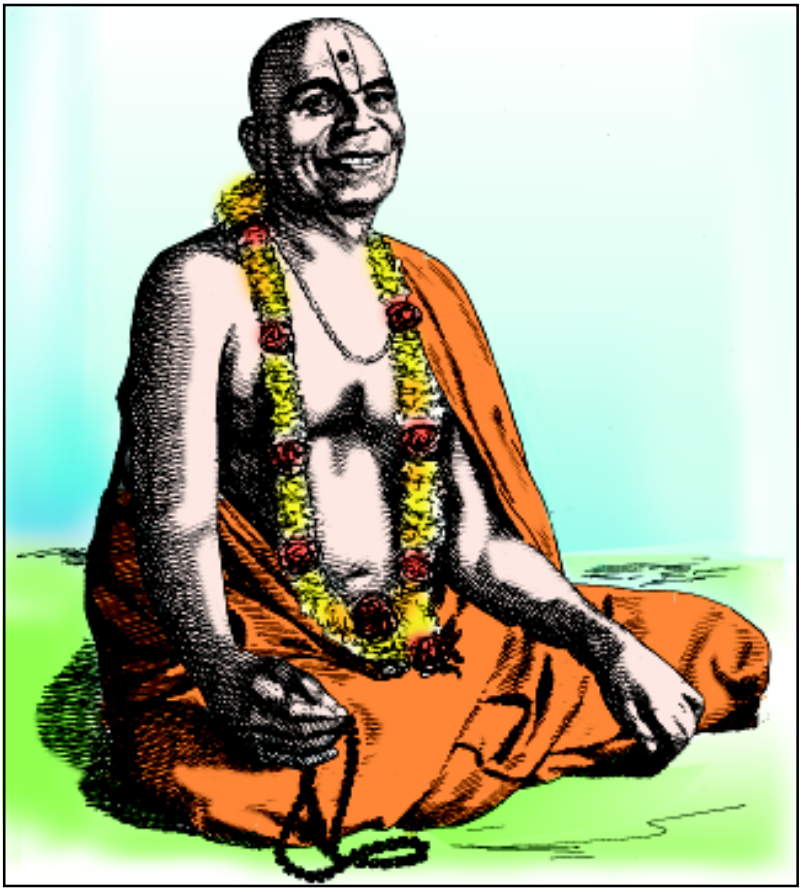

ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज (सन् 1892-1971)

योगीजी महाराज

1. झीणाभाई का जन्म

गुजरात राज्य के 'अमरेली' जिले में 'धारी' नाम का एक गाँव है। उसमें देवचंदभाई वसाणी नाम के एक लोहाणा हरिभज़्त रहते थे। देवचंदभाई के पितामह भगवान स्वामिनारायण के कृपापात्र भज़्त थे।

संवत् 1948 (सन् 1891) के वैशाख कृष्ण द्वादशी के दिन धारी में पिता देवचंदभाई तथा माता पुरीबाई के घर योगीजी महाराज का जन्म हुआ था। उनका बचपन का नाम झीणाभाई था। माता-पिता प्यार से उन्हें 'झीणा' कहकर पुकारते थे। झीणा सबको प्यारा था। उसका सुन्दर, तेजस्वी चेहरा अत्यंत आकर्षक था।

झीणा बहुत छोटा था, तभी से उसकी माता उसे लेकर खेत में मजदूरी करने जाती थीं। पुरीबाई के साथ गाँव की अन्य स्त्रियाँ भी अपने-अपने बच्चों के साथ मजदूरी करने आती थीं। सभी स्त्रियाँ अपने-अपने बच्चों को किसी पेड़ की छाया में सुलाकर अपने-अपने काम में लग जाती थीं। प्राय: सभी बच्चें अपनी माँ को न देखकर ज़ोरों से रोते-चिल्लाते रहते। यह सुनकर खेत का मालिक ऊब जाता और उन बच्चों की

माताओं पर काफ़ी गुस्सा करता तथा कभी-कभी गालियाँ भी देता रहता। वह डाँटता हुआ सभी को कहता कि 'ऐसे बच्चों को लेकर तुम काम पर ही ज़्यों आती हो?' परंतु सभी महिलाओं के लिए आश्चर्य की बात यह थी कि, कभी पुरीबाई को ऐसी डाँट सुनने का समय नहीं आया। ज़्योंकि 'झीणा' कभी रोता नहीं था।

उसे देखकर खेत का मालिक कहता कि 'पुरीबाई! तुज़्हारा यह बच्चा बहुत चमत्कारिक है। देखो, श्रीकृष्ण की तरह वह हमेशा दायें पैर का अंगूठा चूसता रहता है। मेरा कहना ध्यान से सुनो पुरीबाई! तुज़्हारा यह लड़का बडा होगा तब बड़े-बड़े लोग उसके चरणों में अपना माथा टेकेंगे और उसकी पूजा करेंगे।'

झीणा जब बड़ा होने लगा तो लोग उसे 'झीणाभाई' या 'झीणाभज़्त' कहने लगे। बचपन से ही उन्हें सादगी और स्वच्छता पसंद थी। भज़्ति और भजन के सिवा किसी में उनका मन नहीं लगता था।

2. ध्यानमग्न झीणाभाई

धारी गाँव के पास तीन नदियों का संगम होता था। लोग उस स्थान को शेत्रुंजी नदी का त्रिवेणी संगम कहते थे। संगम पर एक छोटी-सी पुलिया थी। उसके पास पहुँचते ही नदी छोटे-से झरने-सी हो जाती थी। गाँव के लोग उस स्थान को 'पातालिया झरना' कहते थे। आज कल बड़ा बाँध बनने के कारण वह स्थान डूब में चला गया हैं।

इस पवित्र स्थान पर पुलिया के निकट झीणाभाई प्रतिदिन प्रात:काल स्नान करने के लिए जाते थे। तत्पश्चात: स्वच्छ वस्त्र पहनकर, पालथी लगाकर वे ध्यान लगाकर बैठ जाते। बड़ी देर तक वे ध्यानमुद्रा में बैठकर भगवान स्वामिनारायण की मूर्ति को मन ही मन देखते रहते। जो कोई इस बाल योगी को देखता उसे ऋषियों के तपोवन में बैठे हुए कोई वेद कालीन ऋषिपुत्र की स्मृति होने लगती। लोगों को लगता कि मानो साक्षात् ध्रुवजी ही तपश्चर्या के लिए पुन:प्रकट हुए हैं।

झीणा भज़्त के साथ कभी कभी उनके बालमित्र भी स्नान के लिए वहाँ आते थे। वे ध्यानमग्न झीणाभज़्त को देखकर आश्चर्यचकित होते, और

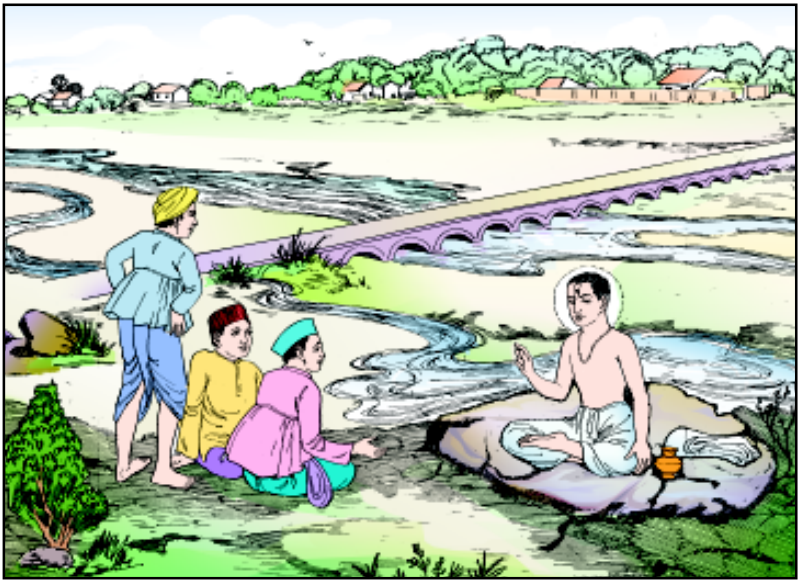

झीणाभज़्त के जागने की प्रतीक्षा में देर तक खड़े रह जाते। वे झीणाभज़्त को ध्यान से जागते ही पूछने लगते कि झीणा, ध्यान लगाकर तुम ज़्या देख रहे हो? झीणाभज़्त कहते 'मित्रो, मैं ध्यान लगाकर भगवान को देख रहा हूँ, यदि आप भी देखना चाहते है तो मेरे साथ ध्यान लगाकर बैठिए। मैं आप सभी को ध्यान लगाना सिखा दूँगा।'

इस प्रकार वे अपने मित्रों ध्यान, भजन और भज़्ति में मन लगाना सिखा रहे थे। वे कहते थे कि सभी को प्रात:काल उठकर भगवान स्वामिनारायण का स्मरण करके तथा उनका ध्यान करके ही सांसारिक प्रवृज़ियों में जुड़ना चाहिए।

3. निडर सत्यवक्ता

जब झीणाभाई पाँचवीं कक्षा में पढ़ते थे उस समय की यह घटना है। उनकी पाठशाला के प्रधान अध्यापक का नाम था त्रिभुवनदास। वे अत्यंत क्रोधी स्वभाव के थे। उन्होंने एक दिन चन्दू नामक एक विद्यार्थी को बिना अपराध के भारी सजा दी। उन्होंने उसे इतना पीटा की वह बेहाल हो गया। फिर त्रिभुवनदास ने उसे उठाकर हाथ पकड़कर नीचे पटक दिया।

झीणाभाई के करुणापूर्ण हृदय से हाहाकार उठने लगा। वे शिक्षक के अत्याचार को सहन नहीं करपाए। चन्दू पर दया के कारण वे 'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण' की रटना करने लगे। वर्गखंड में उपस्थित विद्यार्थी डर के मारे तितर-बितर हो गए।

सज़्त पिटाई के कारण कुछ समय के बाद चन्दू मर गया। चन्दू के पिताजी ने उच्चवर्ग के अधिकारी को अर्जी करके इस विषय में जाँच करने की याचिका दर्ज की।

जब कानून के जरिये जाँचपडताल शुरू हुई तो किसी विद्यार्थी ने प्रधानाध्यापक त्रिभुवनदास का नाम देने हिंमत नहीं की। अधिकारी ने कक्षा के सभी विद्यार्थियों से इस विषय में पूछा परंतु हरकोई चुप्पी साधे रहे। किन्तु सत्य के विषय में झीणाभाई चुप रहनेवाले लगे नहीं थे, वे तो सत्यवादी थे, सत्य कहने में प्रधानाध्यापक का डर नहीं होना चाहिए। ऐसा सोचकर उन्होंने निडरता से उच्चवर्ग के अधिकारी से कहा : 'हमारे प्रधानाध्यापक ने बेगुनाह चन्दू को सभी के देखते हुए बहुत पीटा था और उसे हाथ पकड़कर ज़मीन पर पटक दिया था।' यह सुनकर सभी छात्रों के दिल में हिज़्मत का संचार हुआ।

सभी एक साथ बोल उठे कि 'साहब! प्रधानाध्यापक त्रिभुवनदास ने ही चन्दू को पीटा है।'

अधिकारी ने झीणा की और देखा। भाल पर तिलक, चेहरे पर निर्दोषता और सच्चाई तथा दिल की हिंमत इस मासूम बालयोगी की आँखों में चमक रही थी। अधिकारी ने झीणाभाई की जुबानी सुनकर तुरन्त प्रधानाध्यापक पर अभियोग चलाया और झीणाभाई को सत्य बोलने के लिए पुरस्कार दिया।

कहा भी गया है कि, 'सत्यमेव जयते'। सत्य की ही जय होती है। हमें भी सत्य बोलने में किसी से नहीं डरना चाहिए। बचपन से ही सत्य बोलने की आदत डालनी चाहिए।

4. आदर्श विद्यार्थी

झीणाभाई पढ़ाई में बहुत होशियार थे। प्रत्येक कक्षा में वे अव्वल रहते थे। पुरस्कार भी पाते थे।

पढाई में कमज़ोर कुछ फिसड्डी लड़के झीणाभज़्त के अगल-बगल में बैठते थे, ताकि उनकी स्लेट से देखकर लिखने में आसानी हो। परंतु झीणाभज़्त को ऐसी चोरी पसंद नहीं थी। वे जब उन लड़कों को देखने नहीं

देते तो डरा-धमकाकर वे आँखें दिखाते और कहते 'जवाब लिखने पर तुम हमें बताते ज़्यों नहीं? हमको दिखा देना।' झीणाभाई मुस्कुराकर कहते 'हाँ भाई हाँ, मैं अपनी स्लेट जरा सी टेढ़ी रखूँगा, आप लोग जवाब देख लेना।'

परंतु गणित सिखने पर हिसाब ही झीणभाई अपनी स्लेट उल्टी रख देते। कुछ फिसड्डी विद्यार्थी झीणाभाई से जवाब पूछते, लेकिन वे बिलकुल चुप्पी साध लेते।

कोई विद्यार्थी उन्हें डाँटता कि 'यदि तुमने जवाब नहीं बताया तो बाहर जाकर बहुत पीटेंगे।' तब वे निर्भय होकर कहते कि 'आप को स्वयं हिसाब लगाना चाहिए। यदि मेरा हिसाब होगा तो तुज्हारा भी गलत हो जाएगा।'

यदि कोई उनकी स्लेट से देखकर जवाब लिख भी लेता तो झीणाभाई उसको धीरे से कहते कि 'देखो भाई, यह आप अच्छा नहीं कर रहे हैं, दूसरों से चोरी करके लिखना उचित नहीं है। चोरी करना तो भगवान को ठगना ही है।'

वे हमेशा सभी को पढ़-लिखकर होशियार बनने का उपदेश देते रहते और कहते कि पढ़ाई में चोरी करना महापाप है।

5. समय का सदुपयोग

दोपहर को दो बजे पाठशाला में आधे घण्टे की छुट्टी मिलती थी। उस समय विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के खेल खेलने लग जाते। झीणाभाई को खेलों में बिल्कुल रुचि नहीं थी। वे तो भगवान के भजन और ध्यान में ही रुचि रखते थे, इसलिए पाठशाला के अन्य लड़के जब खलते रहते तब झीणाभाई अकेले किसी पेड़ के नीचे बैठकर भगवान के भजन में तल्लीन हो जाते।

विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के मन में हमेशा कुतूहल रहता कि 'झीणा अकेला बैठकर वहाँ यह ज़्या कर रहा है?'

एक दिन शिक्षकों ने झीणाभाई को पेड़ के नीचे ध्यानस्थ देखकर पूछा, 'झीणा! तू खेलता ज़्यों नहीं? सारे दिन केवल भगवान का ही स्मरण किया करता है, और वैरागी बन बैठा है, तो फिर साधु ज़्यों नहीं हो जाता?'

'जी हाँ, साधु हो जाऊँगा।' इतना कहकर वे मुस्कुरा देते और पुन: भगवान का भजन करने लगते। किसी को पता कि वास्तव में झीणाभज़्त आगे चलकर त्यागी हो जाएँगे; और दुनियाभर में बड़ा नाम कमाएँगे।

जिस प्रकार झीणाभाई फ़ुर्सत का समय व्यर्थ न गँवाकर भगवान का भजन किया करते थे, उसी प्रकार हम भी भगवान का भजन करके समय का सदुपयोग करें, ताकि भगवान प्रसन्न हों।

6. ठाकुरजी की सेवा

धारी गाँव के स्वामिनारायण मन्दिर में झीणाभज़्त के काका मोहनभाई पूजारी रहकर ठाकुरजी की सेवा किया करते थे। परंतु वृद्ध होने के कारण तथा बार-बार बीमार हो जाने के कारण ठाकुरजी की सेवा में उनको बहुत कठीनाई होती थी। वे सोचते रहते कि सेवा कोई भला-सा भज़्त सेवा करने के लिए तैयार हो जाए तो मुझे कितनी राहत मिल सकती है।

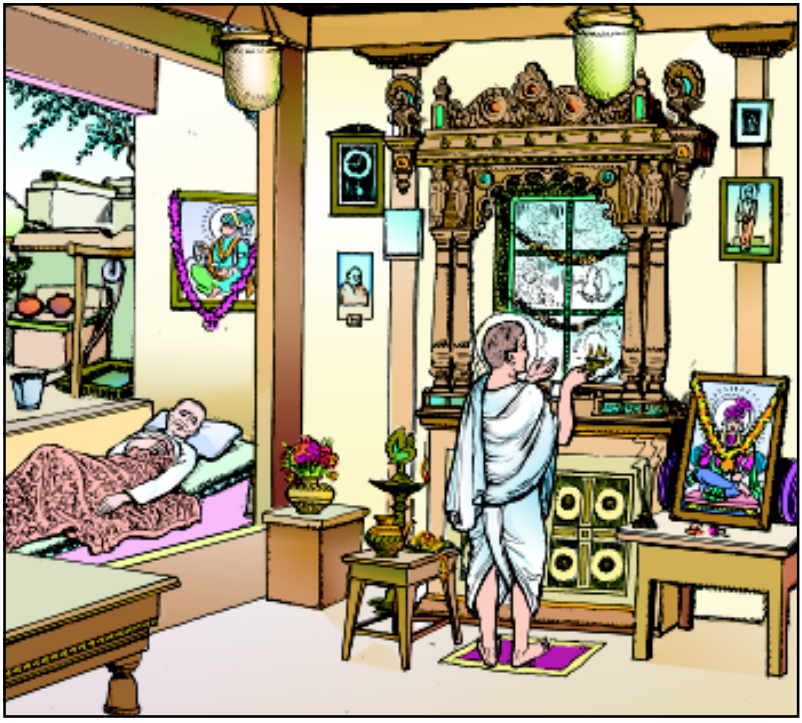

आखिर उनकी नज़र झीणाभज़्त पर पड़ी। एक दिन उन्होंने पूछा, 'झीणा तुम मेरे बदले में ठाकुरजी की सेवा करोगे?'

झीणाभाई तो खुश होकर तुरंत तैयार हो गए। ठाकुरजी की सेवा करने का अवसर कहाँ से मिलेगा? उन्होंने भावपूर्वक कहा, 'मोहनकाका! आप चिंता मत करें। मैं ठाकुरजी की सेवा हमेशा के लिए बहुत ही भज़्तिभाव से करूँगा।'

उसी दिन से झीणाभाई ने ठाकुरजी की सेवा प्रारंभ कर दी। वे ठाकुरजी को स्नान कराते, चन्दन-कुंकुम का तिलक करते, धूप-दीप तथा भोग लगाते, श्रद्धापूर्वक नित्य नियम से आरती करते, विधिपूर्वक हर प्रकार की सेवा करना उन्होंने सीख लिया।

कुएँ से पानी निकालकर मन्दिर के आँगन में फूल-झाड़ उगाये, फूलों की बेल दीवार पर चढ़ाई। कुछ दिनों में मन्दिर की रौनक ही बदल डाली। मन्दिर फूलों की सुगंध से महक उठा। झीणाभाई प्रतिदिन प्रात:काल रंगबिरंगे फूलों की मालाएँ गूँथते और ठाकुरजी को प्यार से पहनाते। नये-नये खाद्य पदार्थ लेकर ठाकुरजी को थाल में अर्पण करके वे गद्‌गद भाव से नैवेद्य गीत गाते। उन्होंने कभी ठाकुरजी को मूर्तिरूप नहीं माना उनके लिए तो वही मूर्ति चलते-फिरते, खाते-पिते प्रत्यक्ष भगवान ही थे। एकचिज़ होकर वे जब भगवान की पूजा करने लगते तब मूर्ति के साथ बातें भी किया करते!

प्रात:काल और संध्या के समय वे अपने बालमित्रों को मन्दिर में बुलाते, धुन करवाते और आरती के दण्डवत् प्रणाम करना भी सिखाते। अंत में प्रसाद देकर सभी को बिदा करते।

7. मुझे साधु बनाइये

अब मन्दिर ही झीणाभाई का निवासस्थान बन गया। ठाकुरजी की सेवा के साथ-साथ मंदिर में आने वाले साधु-सन्तों की सेवा करना उनको बहुत भाता था। सभी संत इस सेवाभावी तरुण की सेवा से प्रसन्न होकर उन्हें आशीर्वाद देते थे।

झीणाभाई सातवीं कक्षा में उज़ीर्ण हुए। उस समय जूनागढ़ के अग्रणी संत पूज्य कृष्णचरण स्वामी, अपनी सन्त मण्डली के साथ धारी गाँव आ

पहुँचे। झीणाभाई सन्तों को देखकर प्रसन्न हो उठे। सुबह से लेकर देर रात तक वे उनकी सेवा में लगे रहते। प्रात:काल उठकर स्नान-पूजा करके वे सन्तों की सेवा में लग जाते । कुएँ से पानी सींचकर सन्तों को नहलाना, । मन्दिर में झाड़ू लगाकर आसन बिछा देना आदि अनेक सेवाए उन्होंने बडे भज़्ति भाव से अपने सिर उठा ली थी।

स्वामी कृष्णचरणदासजी अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी के कृपापात्र शिष्य थे। उन्होंने झीणाभाई की भज़्ति तथा श्रद्धा देखी तो वे बहुत प्रसन्न हुए।

एक दिन उन्होंने झीणाभाई को प्रसाद देकर धीरे से पूछा, 'झीणा! साधु बनोगे?'

झीणाभाई के आनन्द की कोई सीमा ही न रही। उन्होंने बडे उत्साह के साथ कहा, 'जी महाराज, आप मुझे साधु बनाएँ तो बड़ी कृपा होगी। मेरी भी यही इच्छा है। कई दिनों से आपके सामने इस इच्छा को व्यज़्त करने की मैं सोच रहा था। आज आपने मेरे मन की ही बात छिन ली, कृपया मुझे साधु बनाइये। मैं त्यागी होकर आपकी और ठाकुरजी की सेवा करना चाहता हूँ।' सद्‌गुरु कृष्णचरणदासजी ने आशीर्वाद दिया कि 'तुज़्हारी इच्छा अवश्य पूर्ण हो।'

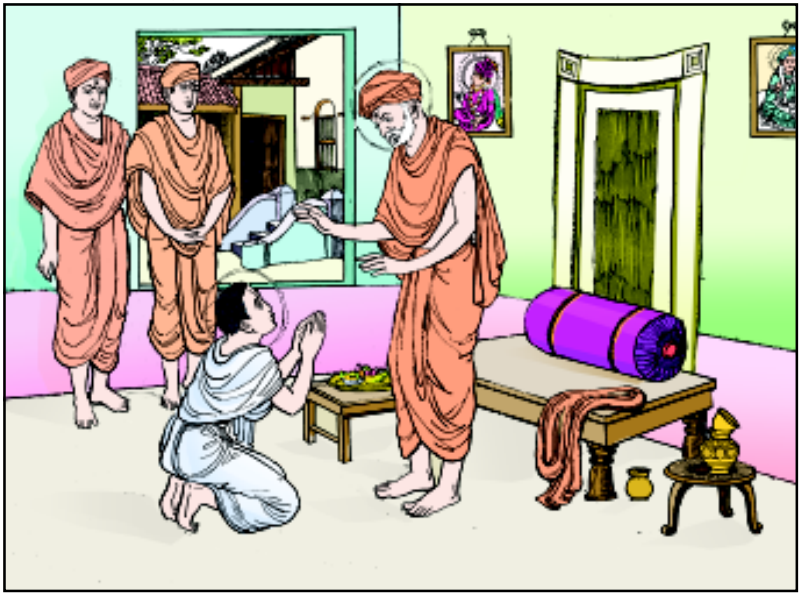

8. झीणा भगत जूनागढ़ में

एक साल के बाद झीणाभाई ने साधु होने के लिए माता-पिता से अनुमति माँगी। माता पुरीबाई ने झीणाभाई को अन्तिम बार मीठा मुँह कराया, भाल में तिलक किया, शुभाशिष देकर अपने पुत्र को त्यागी होने के लिए बिदा दी। संवत् 1965, कार्तिक शुज़्ला सप्तमी के दिन (दि. 1-11-1908) झीणाभाई ने संसार का त्याग कर दिया। उनके बड़ेभाई का नाम था कमलशीभाई। वे जूनागढ़ तक झीणाभज़्त के साथ रहे। वहाँ दोनों की मुलाकात सद्गुरु कृष्णचरण स्वामी से हुई।

ठीक सात दिन के बाद कार्तिक शुज़्ला चतुर्दशी के दिन (दि. 8-11-1908) सद्गुरु कृष्णचरण स्वामी ने उन्हें पार्षद-दीक्षा देकर विधिवत् त्यागाश्रम में प्रवेश दिया। अब झीणाभज़्त मन्दिर की प्रत्येक सेवा में बड़े भज़्तिभाव से जुड़ गये। उन दिनों मन्दिर की गोशाला की सेवा हमेशा पार्षद ही किया करते थे। झीणा भज़्त अन्य पार्षदों के साथ गिरनार पर्वत की तलहटी में गोशाला के पशुओं को चराने के लिए ले जाते थे। वहाँ भी समय मिलते ही वे भगवान स्वामिनारायण के भजन में लीन हो

जाते अथवा उन्हीं के चरित्रों की कथा करते या सुनने लगते। दूसरों से सुनते। गायों को भी झीणाभज़्त के साथ इतना गहरा नाता हो गया कि उनके एक इशारे पर गायें दौड़कर उन्हें घेर लेती थीं।

संध्या के समय जब वे मवेशियों के साथ मन्दिर लौटते, तो रास्ते में आने वाले बबूल के पेड़ों से तीन सौ छड़ियाँ दातून के लिए काट लेते, जो पूरे त्यागी वृंद के लिए काम आती थीं । प्रात:काल मन्दिर में झाड़ू लगाना, गोबर साफ़ करना और उपले पाथना आदि सेवा का जिज़्मा झीणाभज़्त ने अपने सिर उठा लिया था।

कठोर परिश्रम ओर घंटों तक सेवा करने कारण उनका शरीर बहुत श्रमित हो जाता। परन्तु उनकी नींद कभी पूरी नहीं होती। वे प्रतिदिन नियमानुसार होने वाली रात्रीकथा में उपस्थित रहते। स्वयं नामधुन करवाते, भजनगान करते तथा एकाग्रता पूर्वक कथा श्रवण भी करते। चाहे देर तक कथा चलती रहे पर दूसरे दिन वे गुरु की सेवा के लिए प्रात: चार बजे उठना कभी नहीं चूकते। यहीं था, उनका सेवा और कथा से भरपूर नित्यक्रम।

उन्होंने पूरे छह महीने तक ऐसी कठोर सेवा-शुश्रूषा करके सद्गुरु कृष्णचरण स्वामी की प्रसन्नता प्राप्त कर ली। उन्हीं की तरह हमें भी गुरुजनों की सेवा करके उन्हें प्रसन्न करना चाहिए।

9. जागा भक्त के दर्शन

उन दिनों राजकोट के निकट पड़ते मेवासा गाँव के भज़्तराज कृष्णजी अदा तथा पूंजाजी बापू बार-बार जूनागढ़ आते थे। झीणा भज़्त इन दोनों विद्वान हरिभज़्तों के पास बैठकर हमेशा कथा-श्रवण किया करते। कभी-कभी कृष्णजी अदा गुणातीतानंद स्वामी के शिष्य जागाभज़्त के चरित्र की बातें बड़े उत्साह के साथ सुनाते। एक दिन ऐसी बाते सुनकर झीणाभज़्त के मन में जागाभज़्त के दर्शन करने की तीव्र अभिलाषा जागृत हुई।

इसी सोच-विचार में वे सो गए। रात को करीब दो बज चूके थे। मन्दिर की धर्मशाला में जाली के पास उनका बिस्तर लगा हुआ था। अचानक उन्हें सुन्दर स्वप्न दिखाई दिया। सपने में जागाभज़्त के दर्शन हुए। उन्होंने मस्तक पर सफेद पाग बाँधी थी, छोटी सी धोती पहनी शरीर खूला था और हाथ में माला फेर रहे थे। स्वप्न में ही झीणाभज़्त ने उन्हें दो दण्डवत् प्रणाम किए।

जागाभज़्त ने कहा, 'बस कीजिए। भज़्तराज।'

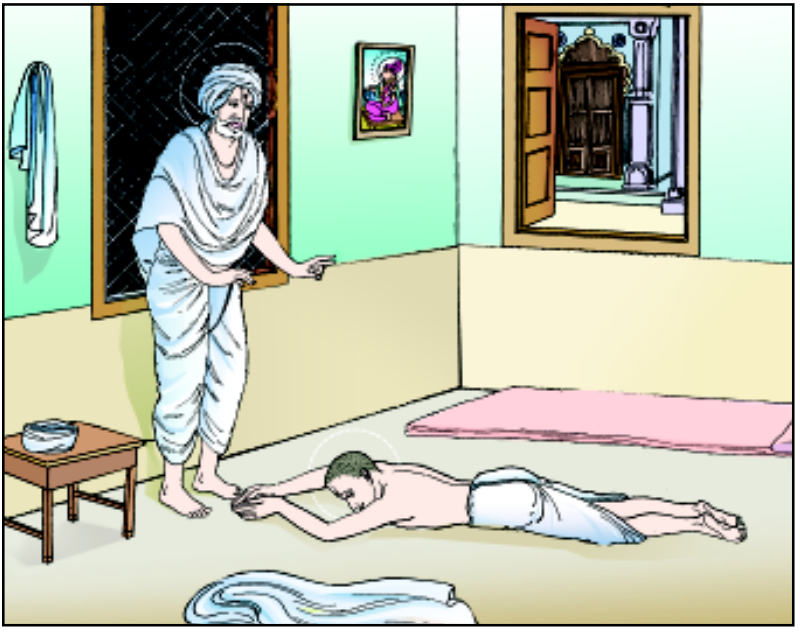

झीणाभज़्त ने कहा, 'महाराज! आज आपने मेरे दिल की कामना पूरी की है। आज मैं बहुत प्रसन्न हूँ। कृपया कुछ प्रेरणावचन दीजिए।' जागा भज़्त ने बोध देते हुए कहा, 'दो बातें स्मरण में रखना : एक तो सत्शास्त्र के अध्ययन का व्यसन हमेशा रखना और दूसरी बात यह कि उज़म साधु-सन्तों का संग करना।' झीणाभज़्त फिर उनके चरणों में बार-बार साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करने लगे।

वे कहते थे की सत्शास्त्र का अध्ययन अर्थात् वचनामृत, गुणातीतानन्द स्वामी का उपदेशामृत, शिक्षापत्री, भज़्तचिन्तामणि, हरिलीलामृत आदि धर्मग्रन्थों का नियमित पठन-पाठन तथा मनन करना। तथा अच्छे सन्तों के सत्संग का अर्थ है, गुरु शास्त्रीजी महाराज के समान गुणातीत सत्पुरुषों का सत्संग अथवा उनके उपदेशवचनों का अध्ययन।

इन दोनों अच्छी आदतों के द्वारा हम भी झीणाभज़्त के समान सद्गुण बन सकते हैं।

10. प्रथम मिलन

झीणाभज़्त कृष्णचरण स्वामी के साथ गाँव-गाँव सत्संग प्रचार के लिए विचरण कर रहे थे। एक दिन यह सन्त मण्डल राजकोट आ पहुँचा।

एक दिन रात्रि के समय बी.ए.पी.एस. के संस्थापक ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज राजकोट पधारे थे। आज तक झीणाभज़्त ने उनके विषय में बडे-बडे संतों-भज़्तों से बहुत बातें सुनी थीं। परन्तु उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था। आज उनको मालूम हुआ कि शास्त्रीजी महाराज का निवास के कृष्णजी अदा के घर रखा गया है। तो उनके मन में ऐसे महान संत के प्रत्यक्ष दर्शन की प्रबल इच्छा जागृत हो गई। वे बड़े सबेरे, तीन बजे उठकर कुछ सन्तों के साथ आजी नदी पर स्नान करने के निमिज़ कृष्णजी अदा के घर जा पहुँचे।

वहाँ उपस्थित हरिभज़्त जादवजीभाई ने शास्त्रीजी महाराज से निवेदन किया कि 'जूनागढ़ के कुछ सन्त आपके दर्शन के लिए पधारे हैं।' शास्त्रीजी महाराज स्वयं उठकर उस कमरे में गए, जहाँ सन्तमंडल बैठा था। झीणाभज़्त और साथी सन्तों ने उठकर उन्हें दण्डवत् प्रणाम किया और

शास्त्रीजी महाराज के साथ प्रथम मुलाकात

बाद में गुणातीतानन्द स्वामी की प्रासादिक माला एवं कमण्डलू भेंट में दिया। शास्त्रीजी महाराज यह देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए।

झीणाभज्त एकाग्र मन से शास्त्रीजी महाराज के दर्शन करते रहे। और उनकी की कृपादृष्टि इस युवा पार्षद पर स्थिर हो गई। झीणाभज्त ने मन ही मन निश्चय कर लिया कि 'यदि गुरु करूँगा तो इन्हीं को करूँगा!' उन्होंने अपने हृदय से शास्त्रीजी महाराज को गुरु मान ही लिया।

संवत् 1966 (दि. 12-8-1910) के श्रावण शुज़्ला सप्तमी के दिन शास्त्रीजी महाराज और झीणाभज्त का प्रथम मिलन राजकोट में हुआ। मानो गंगा और सागर का संगम हो गया!

11. मैं तो सेवक हूँ

कुछ समय के बाद सद्गुरु कृष्णचरण स्वामी अपने संत मंडल के साथ के साथ राजकोट के आस-पास देहातों में विचरण के लिए निकले। सभी सरधार गाँव के पास हजड़ियाला गाँव में आकर सभी गाँव के चौरे-पर ठहरे। इस गाँव में स्वामिनारायण का मन्दिर नहीं था।

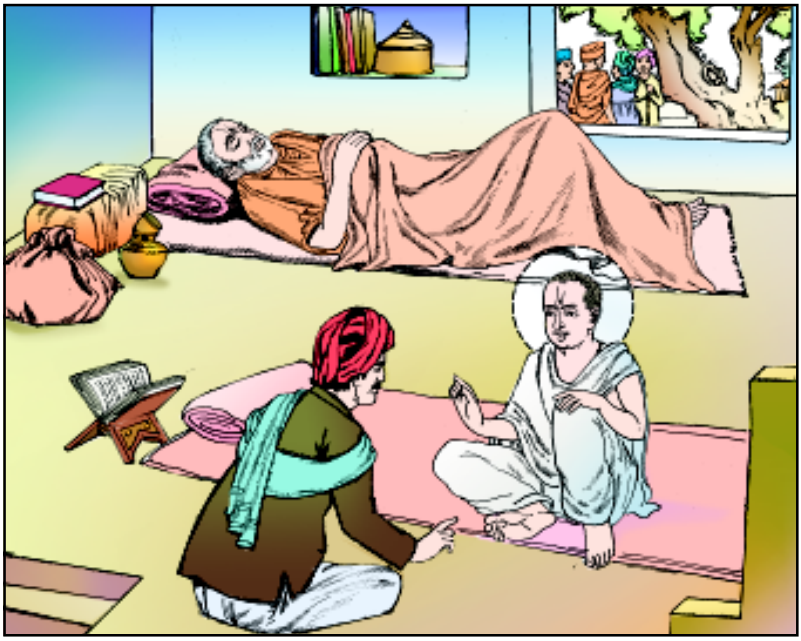

दोपहर के समय कथा की समाप्ति के बाद सभी सन्त सुस्ताने लगे तब झीणाभज़्त ने भी सेवा से निवृज़ होकर एक साधाराण से बारदान पर पैर फेलाये। उस समय अचानक एक गरासिया (जागीरदार) हरिभज़्त वहाँ आ पहुँचे। जो ज्योतिष के जानकार थ तथा सामुद्रिक शास्त्र के भी विद्वान थे। उनकी दृष्टि झीणाभज़्त के पैरों के तलवे पर पड़ी। वे आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने आज तक ऐसी चमत्कारिक चरण-रेखा कभी नहीं देखी थी।

झीणाभज़्त ने उठकर उन क्षत्रिय गृहस्थ का स्वागत किया। उन्होंने मुस्कारेत हुए कहा कि 'भज़्तराज, आप तो बड़े सद्गुरु बनेंगे। लाखों मनुष्य आपकी कृपादृष्टि के लिए आपके आगे-पीछे घूमते रहेंगे। आपकी सेवा का अवसर प्राप्त करने के लिए आपसे प्रार्थना करेंगे। भगवान स्वामिनारायण एक क्षण के लिए भी आपसे जुदा नहीं होंगे। आपके चरणों में जो ऊर्ध्वरेखा है, ऐसी रेखा मैंने कहीं नहीं देखी। ऐसी रेखा जीनके चरणों में होती हैं, ऐसे पुरुष वास्तव में अवतारी विभूति का स्थान प्राप्त करते हैं। जो बड़ी संज़्या में नहीं होते।'

झीणा भज़्त ने यह सुनकर अपने वस्त्र से पैर ढँक लिए और उन ज्योतिषी से कहने लगे 'ऐसा मत कहिए, दरबार, मैं तो एक साधारण सेवक हूँ, सद्गुरु तो हमारे कृष्णचरण स्वामी हैं, आईन्दा ऐसी बात आप कृपया करके किसीसे नहीं कहिएगा।' लेकिन राजपूत सामुद्रिक यह बात कृष्णचरण स्वामी से कहे बिना न रहे।

कृष्णचरण स्वामी ने अपने शिष्य की महिमा सुनी तो बोल उठे, 'वास्तव में झीणाभज़्त के लक्षण ऐसे ही हैं। ये तो महान भज़्त बनेंगे, इसमें मुझे कोई शक नहीं है।'

12. तपस्वी झीणा भगत

मेंगणी, जूनागढ़ के पास एक छोटा सा गाँव हैं। गाँव के ठाकुर साहब भगवान स्वामिनारायण के बहुत अच्छे भज़्त थे। प्रतिवर्ष वे अपने गाँव में अन्नकूट का उत्सव धूमधाम से मनाते और उस अवसर पर सद्गुरु कृष्णचरण स्वामी को अपने गाँव ले जाते।

परंतु एकबार लोधिका के ठाकुर साहब ने सद्गुरु कृष्णचरण स्वामी

को अपने गाँव में अन्नकूट उत्सव के लिए बड़े भावपूर्वक निमंत्रित किया। ठाकुर साहब बहुत श्रद्धालु प्रकृति के भज़्तराज थे। उन्होंने अन्नकूट के लिए बड़े पैमाने पर तैयारी की थी। सारे साधु-सन्त और पार्षद सुबह से शाम तक विभिन्न सामग्री लग गये थे।

अन्नकूट का दिन आ गया। आज ठाकुर साहब के ओर से संतों के लिए साटे और इमरती की स्वादिष्ट रसोई की सेवा थी। परन्तु झीणाभज़्त तो ऐसे अवसर पर हमेशा निर्जल उपवास करना ही पसंद करते थे। जब उन्हें इस बात का पता चला तो उस दिन उन्होंने निर्जल उपवास का व्रत रख लिया। भोजन के समय केवल एक झीणाभज़्त ही उपस्थित नहीं थे।

ठाकुर साहब को जब यह मालूम हुआ तो वे उनके पास आकर विनम्र भाव से निवेदन करने लगे कि 'भज़्तराज, आज तो त्यौहार का दिन है, आज उपवास का नहीं रखना चाहिए, आप प्रसाद लेने के उपस्थित हो यही हमारी प्रार्थना है।' परन्तु झीणाभज़्त अपने निर्णय से तनिक भी विचलित नहीं हुए। परन्तु ठाकुर साहब को कहीं बूरा न लग जाए इसी लिए वे कहने लगे, 'ठाकुर साहब, वैसे भी मुझे पेट में दर्द हो रहा हैं। यदि भोजन नहीं करूँगा तो अच्छा हो जाएगा। अब आज तो मेरी भोजन

के लिए तनिक भी इच्छा नहीं हैं।' उन्होंने किसी प्रकार सभी की बातों को टाल कर व्रत-नियम की टेक नहीं छोड़ी ! अब ठाकुर साहब कृष्णचरण स्वामी के पास पहुँचे और निवेदन किया कि 'स्वामी, आप उन्हें समझाइए कि वे भोजन कर लें।' तो उन्होंने भी भोजन के लिए झीणाभज़्त को काफी आग्रह किया। परन्तु वे अपने निश्चय पर अटल रहे। स्वादिष्ट पकवानों का आकर्षण भी उन्हें विचलीत कर सका।

झीणाभज़्त के संयम और त्याग को देखकर स्वामी कृष्णचरणदासजी उन पर बहुत प्रसन्न हुए। रात को अपने पास बुलाकर झीणाभज़्त के सिर पर अपना वरद हस्त रखकर आशीर्वाद देते हुए सभी को उनकी तरह तपस्वी और संयमशील बनने का उपदेश दिया।

13. कृष्णजी अदा के आशीर्वाद

संवत् 1967 चैत्र शुज़्ला त्रयोदशी के दिन (दि. 11-4-1911) आचार्य श्री श्रीपतिप्रसादजी महाराज ने वड़ताल में, झीणाभज़्त को बड़ी धूमधाम से भागवती दीक्षा दी और उनका नाम रखा 'साधु ज्ञानजीवनदासजी'। कृष्णचरण स्वामी उन्हें 'ज्ञानजी स्वामी' कहकर पुकारते और उनकी सहज ध्यानावस्था एवं अखंड भगवान के आनंद में लीन रहने की दिव्य स्थिति को देखकर जूनागढ़ के संत-पार्षद उनको 'योगी' नाम से पुकारने लगे।

संवत् 1967, ज्येष्ठ शुज़्ला एकादशी के उत्सव के बाद योगीजी महाराज सात सन्तों को लेकर जूनागढ़ से हमेशा के लिए शास्त्रीजी महाराज की सेवा में पहुँच गए। यहाँ आकर वे जी-जान से अक्षरपुरुषोज़म के सिद्धांत तथा उपासना प्रर्वतन की सेवाओं में लग गए।

संवत् 1969, आश्विन शुज़्ला एकादशी शनिवार के दिन कृष्णजी अदा के अंतिम पल चर रहे थे। शास्त्रीजी महाराज और संत वृंद के साथ योगीजी महाराज भी उस कमरे में बिराजमान थे।

कुछ देर के बाद अंतिम सांस लेते हुए कृष्णजी अदा ने कहा, 'जय स्वामिनारायण।' और पूछा कि 'ज्ञानजी स्वामी कहाँ हैं?

कृपया उन्हें मेरे पास बुलाइए।' योगीजी महाराज एक कोने से

उठकर उनके पास पहुँचे और दण्डवत् प्रणाम करके खड़े रहे।

कृष्णजी अदा ने संकेत से उनको समीप बुलाकर सिर पर कुछ क्षणों के लिए अपना वरद हस्त फेरा और भावविभोर होकर आशीर्वाद दिए।

यह देखकर शास्त्रीजी महाराज के वरिष्ठ संत निर्गुणस्वामी बोल उठे, 'योगीराज! आपके मस्तिष्क पर यह कृष्णजी अदा नहीं, यह तो श्रीजीमहाराज, गुणातीतानन्द स्वामी, भगतजी महाराज, जागाभज़्त आदि बडे-बडे सिद्ध सन्त आशिष दे रहे हैं, ऐसा समझना।'

कृष्णजी अदा की आँखें प्रेमाश्रु से डबडबा गईं थी। वे सभीको 'जय स्वामिनारायण' कहते हुए कुछ ही क्षणों में अक्षरधाम-निवासी हो गए।

14. निःस्पृही सन्त

योगीजी महाराज की निःस्पृहिता देखकर बड़े-बड़े संत-हरिभज़्त भी विस्मित हो जाते। छोटी उम्र के होने पर भी उनके मन में किसी प्रकार की इच्छा-वासना का अंश भर नहीं दिखा रहा था। सारा दिन वे कथा, कीर्तन, स्तोत्रपाठ और सेवा में ही तल्लीन रहते थे।

एक दिन वे भावनगर में बिराजमान थे। उनका निवास राजमार्ग पर आये हुए एक विशाल भुवन में था। वे ऊपर के कमरे में बैठकर 'गुणातीतानन्द स्वामी का उपदेशामृत' पढ़ रहे थे और कुछ हरिभज़्त सामने बैठकर कथा-श्रवण कर रहे थे।

अचानक राजमार्ग पर बाजे गाजे का शोर होने लगा। ज़्योंकि उस दिन भावनगर के महाराजा अपने घर विवाह-उत्सव मना रहे थे। सारे शहर में धूमधाम मची हुई थी, राजमार्ग से विवाह का जुलूस निकला। मार्ग की दोनों ओर जुलूस को देखने के लिए बड़ी भीड़ जमा हो गई थी। खिड़कियों और छत पर लोग लटक रहे थे। दूर तक शहनाई और नगाड़े की आवाज़ गुँज रही थी। उस भव्य जुलूस को देखने के लिए बच्चे से लेकर बूढ़े तक दौड़े जा रहे थे।

अचानक एक हरिभज़्त दौड़ते हुए योगीजी महाराज के पास आ पहुँचे और कहने लगे, 'महाराजजी! चलिए, शीघ्र चलिए, यहाँ ज़्या बैठे हैं? महाराजा साहब के महल से बारात का जुलूस निकला है, देखने

लायक है, खिड़की से जरा झाँककर तो देखिए।'

योगीजी महाराज ने प्रत्युज़र में सहजभाव से कहा कि 'अरे भाई! हम साधुओं को इससे ज़्या मतलब? हम लोग यह ज़्यों देखेंगे? जिस चीज़ को हमने छोड दिया किया है, उस चीज़ को फिर एक बार अपने-अपने हृदय में स्थान ज़्यों दें?'

वह हरिभज़्त यह सुनते ही स्तज़्ध हो गया। इस नये साधु की वैराग्य भावना देखकर वह बार-बार योगीराज के चरणों मे दंडवत् प्रणाम करने लगा।

सेवा के व्रतधारी और साधुता से परिपूर्ण इस वैराग्य मूर्ति संत की कमी जूनागढ़ के मन्दिर में आज तक लग रही थी। इसीलिए सद्गुरु स्वामी नारायणदासजी ने उनको तीन बार संदेशा भेजा कि 'आप यदि यहाँ - जूनागढ़ वापस लौटे तो आपके स्वागत के लिए मैं जेतपुर तक (करीब ३५ कि.मी.) हाथी लेकर आऊँ, और बड़ी धूमधाम के साथ आपको जूनागढ़ ले चलूँ।'

परन्तु योगीजी महाराज को शास्त्रीजी महाराज के साथ रहकर संप्रदाय की महान सेवाएँ संपन्न करनी थी। अत: वे जूनागढ़ जाने का निर्णय ज़्यों लेते?

योगीजी महाराज के संत मण्डल में एक विज्ञानदास नाम के साधु रहते थे। वे थे तो बड़े विद्वान परन्तु अभिमान और क्रोध के कारण वे हमेशा योगीजी महाराज अपमान करते रहते थे। कभी-कभी तो उनको पीटने से भी बाज नहीं आते। एक दिन संतों का निवास राजकोट में था। यहाँ काम-काज करते हुए योगीजी महाराज से कोई छोटी-सी गलती हो गई। विज्ञानदास ने क्रोधित होकर भोजन करते हुए योगीराज उठ जाने का आदेश दिया। हरिभज़्त हरगोविंददास मेहता यह देख रहे थे, उन्होंने एकान्त में योगीजी महाराज से पूछा, 'महाराज! आप इतना ज़्यों सह लेते हैं? ज़्या ऐसे मौके पर आपको घर की और भाग निकलने की इच्छा नहीं होती?'

योगीजी महाराज ने हँसते हुए उज़र दिया 'नहीं, महेताजी, बड़े संत यदि उलाहना भी देते हैं, तो हमारी भलाई के लिए ही देते हैं, बिना शिक्षा के सावधानी नहीं आती। दण्ड के कारण हमारी भूल सुधरती हैं।'

हरगोंविदभाई यह सुनकर चकित रह गए, कैसी विलक्षण सहनशीलता!

15. मान-अपमान में समता

उन दिनों शास्त्रीजी महाराज ने वैदिक उपासना सिद्धांत की स्थापना करने के लिए मानो क्रांति-ध्वज उठा लिया था। उनको गाँव-गाँव और नगर-नगर में कुछ पुराने संप्रादय के त्यागी तथा हरिभज़्तों से बहुत कुछ सहन करना पड़ता था। वजह बस इतनी थी, कि साधुता और सिद्धांत में अव्वल रहनेवाले शास्त्रीजी महाराज तथा योगीजी महाराज 'अक्षररूप होकर पुरुषोज़म की उपासना' का प्रचार कर रहे थे, जो संप्रदाय के पुराने स्थापित हितों के लिए असह्य था। इसी कारण ये लोग स्वामीजी तथा योगीजी महाराज को मौका मिलते ही मारने-पिटने से चूकते नहीं थे।

एक बार विचरण करते हुए योगीजी महाराज भावनगर जिले के केरिया गाँव में पधारे थे। वहाँ के स्वामिनारायण मन्दिर में उनका निवास था। इस मन्दिर की देखभाल पुरानी मान्यता रखने वाले लोग कर रहे थे।

योगीजी महाराज और संतों ने निर्जल उपवास का व्रत रखा था। दुपहर के समय सभी सन्त मन्दिर में विश्राम ले रहे थे, योगीजी महाराज मूर्तियों के सामने ध्यान लगाकर बैठे थे कि अचानक कुछ द्वेषी त्यागी मन्दिर में आकर योगीजी महाराज की मण्डली के संतों को पीटने लगे। उनके कपड़े और सामान चौक में फेंक दिया, पानी के मटके फोड़ दिए। योगीजी महाराज का हाथ पकड़कर, धज़्का लगाकर साधुओं ने उनको मन्दिर के बाहर ढकेल दिया। वे संप्रदाय के सद्‌गुरुओं के विषय में तिरस्कार सूचक अपशज़्द का प्रयोग कर रहे थे।

'रो ले तेरे गुणातीत को, वह तुझे छुड़ाने के लिए यहाँ आयेगा।' इतना कहकर वे एक अंध और बुजुर्ग संत भगवत्स्वरूपदासजी के पास जा पहुँचे। उनको उठाकर सभी ने लोहे के दरवाजे पर पटक दिया। वे जोरों से कराहने लगे। एक अन्य साधु को कोने में ले जाकर मार-मार कर गिरा दिया, योगीजी महाराज को मुज़्के लातों के प्रहार सहन करने पड़े। विज्ञानदास स्वामी को एक कमरे में बंद कर दिया।

इतना शोर मचा हुआ था कि सुनकर गाँव के कुछ हरिभज़्त लाठियाँ लेकर वहाँ पहुँचे। द्वेषी त्यागीओं को कोहराम मचाते हुए देखा तो सभीने

आकर डरा-धमकाकर किसी तरह वातावरण शान्त किया।

अक्षरपुरुषोज़म सिद्धांत के विरोधी साधुओं के द्वारा स्वामीजी तथा योगीजी महाराज हमेशा अपमानित होते रहे। गालियाँ सहन करते रहे तथा मार खाने के बाद भी साधुता को दूर किये बिना सेवा करते रहे। उनके साथी सन्तों ने भी द्वेषियों के विरुद्ध एक शज़्द तक शिकायत का नहीं कहा। अंततः सहनशीलता की ही विजय हुई।

'मान-अपमान में एकता, सुख दुःख में समभाव' यह सूत्र उनके जीवन में आत्मसात् किया हुआ था। जो हमें भी सिद्ध करना चाहिए।

16. सेवामय सन्त

युवा संत योगीजी महाराज का एक एक पल, सुबह से शाम तक सेवा में ही बीता करता था। लोग सोचते थे कि कभी उनकों थकावट महसूस होती है या नहीं? उनको बिना सेवा के चैन नहीं मिलता था। निर्जल उपवास के दिन भी वे रोज की तरह सेवा ही करते रहते थे, सुस्ती कभी उनको छूती तक नहीं थी।

प्रातःकाल उठकर स्नान-ध्यान से निवृज़ होकर वे रसोईघर में पहुँच जाते, तीन सौ रोटे बना डालते। और रोट गढते हुए हमेशा गुणातीतानन्द स्वामी के उपदेशामृत की कुछ पंज़्तियाँ कंठस्थ कहते रहते। कभी-कभी भजन गाते तो कभी श्लोक कठंस्थ करते। चाहे कितने लोग मन्दिर निर्माण की प्रवृज़ियों में शामिल हुए हो सबकी रसोई योगीजी महाराज स्वयं बनाते।

परोसने की सेवा उन्होंने ही उठा ली थी। रसोई तैयार होते ही ठाकुरजी को नैवैद्य लगाकर वे 'वासुदेव हरे' की पुकार लगाते और सभीको भोजन के लिए निमंत्रित करत। जब सारे सन्त- हरिभज़्त भोजन कर लेते तभी वे भोजन करने के लिए बैठते। सभी के भोजन लेने के पश्चात् वे छोटे-बड़े सारे बर्तन साफ़ करते।

कुएँ से पानी सींचना तथा सभी को स्नान कराना भी उन्होंने अपने जिज़्मे उठा लिया था। रसोई के लिए पानी भरने के लिए भी वे तैयार रहते। बड़े-बड़े बरतन साफ़ करके वे वस्त्र से छानकर शुद्ध पानी भरते।

उनका ऐसा सेवामय जीवन हमे समपित होने के लिए प्रेरणा देता है।

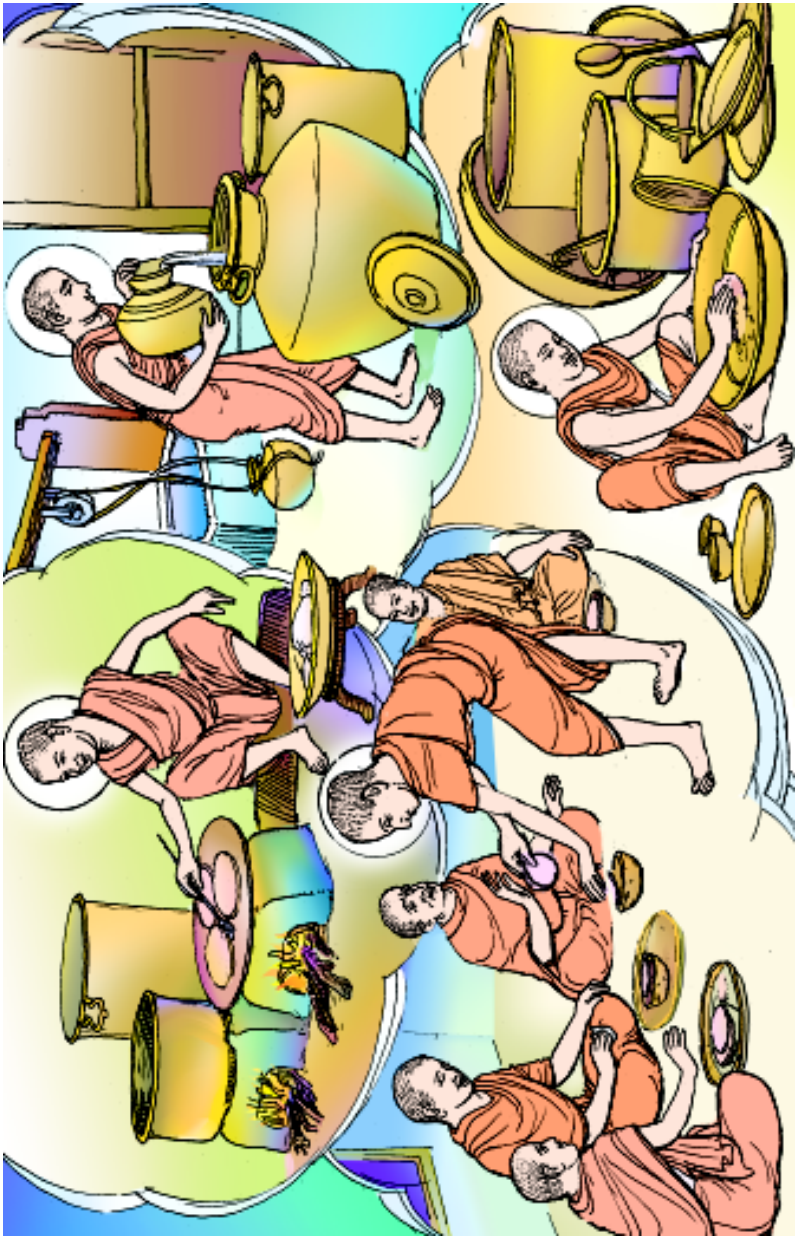

17. सच्चा साधु

सिद्धांत और सदाचार के प्रचार के लिए भगवान स्वामिनारायण संतों को आदेश दिया था। इसी आदेश के अनुसार योगीजी महाराज एक गाँव से दूसरे गाँव बिना दिन या रात देखते हुए विचरण कर रहे थे। जहाँ जाते, वहाँ आटे की भिक्षा माँग लेते और गुज़रा कर लेते। सुविधा के लिए वे किसी के मोहताज नहीं होते।

एकबार बडौदा के पास सांकरदा गाँव में उनका निवास था। योगीजी महाराज अन्ध साधु भगवत्स्वरूपदासजी को साथ लेकर दिक्षा के लिए निकले थे। एक हाथ से उन्होंने भगवत्स्वरूपदासजी को सज़्हाले थे, तो दूसरे हाथ में झोली रखी थी। लोग आटा या अनाज जो कुछ देते, वे अपनी झोली में स्वीकार कर लेते थे। उनको ध्यान रखना पड़ता था कि कहीं भगवत्स्वरूपदासजी को मार्ग में कोई कंकड़ - काँटा न लग जाए, भिक्षान्न से वे मन्दिर आकर रसोई बनाते, भगवान को भोग लगाते, और सन्तों को खिलाकर स्वयं उदर-पोषण कर लेते। यह उनका स्वाभाविक दैनिक क्रम था।

एक दिन वे अड़्वाळ गाँव में भरी दूपहरी में भिक्षा के लिए निकले थे। गाँव के मुखियाँ करसनसंगजी ने देखा कि एक युवा संत अन्ध एवं वृद्ध साधु का हाथ थाम कर, उनको सज़्हालते हुए भिक्षा की आह्लेक लगा रहे थे।

गर्मी के दिनों में वृद्ध साधु के साथ वजनदार झोली लेकर नंगे पाँव धीरे धीरे घर-घर चलते हुए इन संतों को देखकर करसनसंगजी का दिल पसीज उठा। उन्होंने आंगन में आकर कहा 'साधुराम! आप किसी युवा साधु को अपने साथ ज़्यों नहीं रखते? वृद्ध एवं अन्ध साधु को साथ रखकर, वजनदार झोली लेकर भिक्षा माँगने में आपको कितना कष्ट हो रहा है?'

योगीजी महाराज ने मुस्कुराते हुए नम्रतापूर्वक कहा, 'बापू! वृद्ध साधु का साथ मिलना भी भाग्य की बात है। वृद्ध साधुओं की सेवा, बिना सद्भाग्य के नहीं मिलती। उनके साथ रहने से बड़ा लाभ होता है। बातों-बातों में उनके ज्ञान का एवं अनुभव का लाभ होता है और झोली लेकर

भिक्षा माँगने से मन्दिर की सेवा भी होती है।'

एकबार योगीजी महाराज मोजीदड़ गाँव से 'नारायणधरा' पहुँचे। यहाँ पानी का एक झरना बहता रहता था, योगीजी महाराज ने वहाँ स्नान किया। उसी समय नारायणप्रसाद नामक एक द्वेषी साधु से भेंट हो गई। उसने योगीराज का भारी अपमान किया; इतने अपशज़्द कहे कि किसी के भी दिल में आग भड़क उठे परन्तु योगीजी महाराज हँसते-हँसते उनको 'स्वामीजी, महाराजजी' इत्यादि कहकर उसका आदर करते रहे। परन्तु नारायणप्रसाद ने तो इन संतों को मारने के लिए पत्थर के घाव भी किये।

कुछ दिनों के बाद वही नारायणप्रसाद रात को करीब दो बजे बोटाद स्टेशन पर उतरा। बरसात की रात थी। किसी भी ताँगेवाले ने कारियाणी गाँव ले जाने के लिए उसको मना कर दी। वह कीचड़ से सने मार्ग को पार करते हुए बहुत परेशान हो गया। इसके उपरांत मार्ग में कहीं पर उसके पैर में बड़ा सा काँटा चुभ गया था, पैर पर सूजन दिख रही थी। काफ़ी पीड़ा और भूख से वह बैचेन हो उठा था। सारंगपुर के मन्दिर आकर उसने चौकीदार को पुकारा। उसने एक साधु को देखा तो उन्होंने जाकर योगीजी महाराज से कहा, 'कोई साधु आए हैं, यहाँ रातभर ठहरना चाहते हैं।'

योगीजी महाराज द्वार पर पहुँचे देखा तो वहीं द्वेषी साधु नारायणप्रसाद दोनों ने एक दूसरों को पहचान लिया था। पर स्वामीजी बिना कुछ बोले उसको भीतर ले आये। पैर से काँटा निकाला, औषध लगाकर पट्टी बाँध दी। ठाकुरजी के थाल के लड्डू एवं पूड़ियाँ परोसकर उसको खिलाया, बिस्तर बिछाकर विश्राम का प्रबंध किया।

दूसरे दिन उसे कारियाणी जाना था, तो बैलगाड़ी की व्यवस्था भी करवा दी। सुबह उसे इतना पछतावा हुआ कि मेरी सेवा करनेवाले साधु कोई और नहीं स्वयं मेरी गालियाँ और मार खाने वाले योगीजी महाराज ही हैं, उसका हृदय मोम बनकर पिधल गया। मन ही मन उसने सोचा कि 'जिनका मैंने अपमान किया था, उन्होंने आज मुझे प्रेम और सेवा से वाकई जीत लिया हैं।'

पश्चाज़ाप के कारण वहा योगीजी महाराज के चरणों में गिर पडा और कहने लगा, 'उपकार से अपकार का बदला लेनेवाले आप वास्तव में निरभिमानी तथा प्रेममूर्ति सन्त हैं। वैर को प्रेम से शान्त करनेवाले आप भगवान स्वामिनारायण के आदर्श शिष्यरत्न हैं, पूर्ण परमहंस हैं।' योगीजी महाराज के आशीर्वाद लेकर वहाँ बैलगाड़ी में बैठकर कारियाणी पहुँच गया।

18. मन्दिर की सेवा में

योगीजी महाराज सन्तों और हरिभज़्तों की सेवा में अपना तन-मन न्योछावर करते थे। ठाकुरजी की सेवा में उनकी लगन वल्लभाचार्य के समान अत्यंत तीव्र थी। सेवा में न तो वे थकावट की परवाह करते न तो भूख एवं प्यास की। हमेशा गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज की आज्ञा का पालन ही उनका जीवन मंत्र था। वे उनके प्रत्येक कार्य में निष्ठापूर्वक सहायता करते रहते थे।

शास्त्रीजी महाराज ने सर्वप्रथम मन्दिर का निर्माण बोचासण में किया। वहाँ अक्षरपुरुषोज़म महाराज की मूर्ति प्रतिष्ठा मध्य मंदिर में की। तत्पश्चात् आठ साल के बाद भगवान स्वामिनारायण के प्रासादिक तीर्थधाम सारंगपुर में मन्दिर निर्माण का प्रारंभ किया। उस समय संस्था के विकास में सबसे बड़ी बाधा आर्थिक संकट के रूप में मुँह फाड़े खड़ी रहती थी। रुपयों की

की कमी का संकट हर समय मंडराता रहता। साधु, पार्षद और हरिभज़्तों ने उसी वजह मजदूरों को रोकने के बजाय अधिकतर सेवा अपने श्रमदान से ही उठा ली थी। योगीजी महाराज दैनिक क्रम से निवृज़ होकर मन्दिर के बांधकाम की सेवा में लग जाते। सिर पर पत्थर उठाकर वे राज़गीर मिस्त्रियों को देते, फावड़े से चूना, रेती की टोकरियाँ भरकर सिर पर उठाते, नींव खोदने और मिट्टी भरने की सेवा में भी लग जाते। उम्र में सबसे युवा होने के कारण सेवा में भी अव्वल क्रम पर रहते थे।

उनके मन में एक ही भावना थी कि मन्दिर हो जाने पर उसमें अक्षरपुरुषोज़म महाराज की स्थापना करनी है। ऐसी अनन्य सेवा का सुनहरा अवसर मिला है, तो उसका लाभ कभी छोडना नहीं चाहिए। ज़्योंकि ऐसे अवसर बार-बार नहीं मिला करते। सेवा से ही परमात्मा प्रसन्न होते हैं, चाहे वह देवसेवा हो या गुरुसेवा।

योगीजी महाराज की ऐसी सेवाभावना और प्रेम देखकर शास्त्रीजी महाराज बहुत प्रसन्न होते थे। वे बार-बार उन्हें आशीर्वाद देते तथा उनकी प्रशंसा भी करते थे।

19. श्रीजी-स्वामी वश में हैं

एक बार सारंगपुर में जलझुलनी एकादशी का उत्सव धुमधाम से मनाया गया। उस समय शास्त्रीजी महाराज की तबियत ठीक नहीं थी, शास्त्रीजी महाराज की तबियत वे अपने कमरे में विश्राम ले रहे थे। उस समय भावनगर के हरिभज़्त ने आकर स्वामीजी के चरणों में नमस्कार किया। तथा मुज़्य हरिभज़्त कुबेरभाई ने उनके चरणों में प्रार्थना की, 'स्वामीजी, आप एक बार भावनगर पधारिए, ताकि हम सबको सत्संग का सौभाग्य प्राप्त हो।'

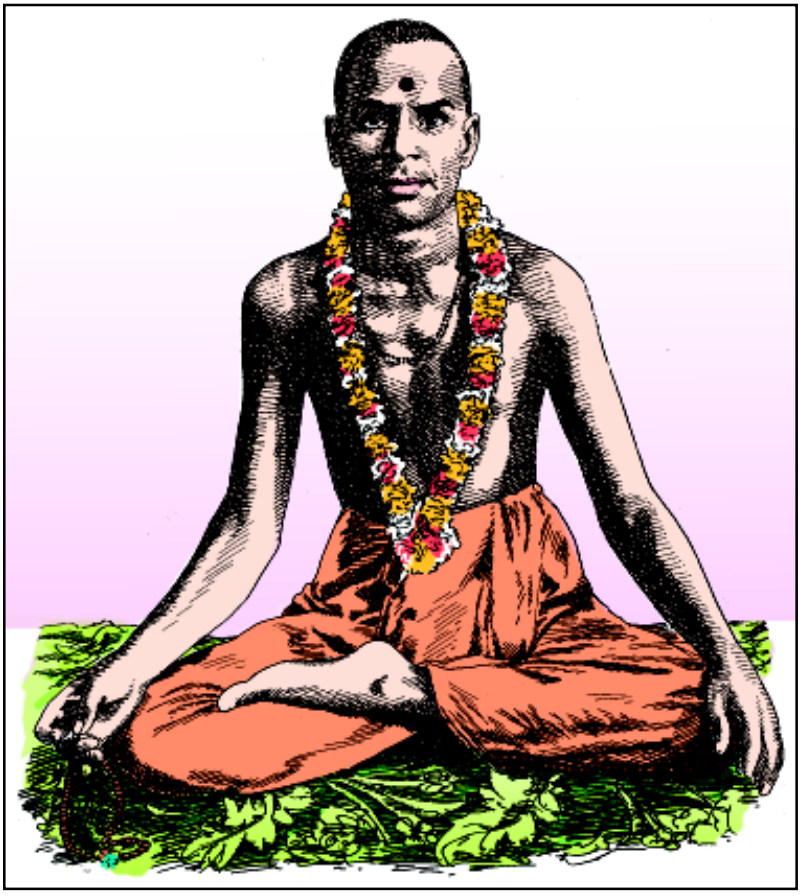

शास्त्रीजी महाराज ने हँसते हुए कहा कि 'आप लोग देख रहे हैं कि मेरा स्वास्थ्य सानुकूल नहीं है, मेरे बदले आप योगीजी महाराज को आपके साथ ले जाइए, उनके आने पर समझ लीजिए मैं ही आ गया हूँ।'

शास्त्रीजी महाराज की आज्ञा से प्रसन्न होकर हरिभज़्तों ने योगीजी महाराज को निवेदन किया। वे आज्ञा सुनते ही तुरंत भावनगर जाने के लिए तैयार हो गए।

वहाँ प्रभुदास सेठ के भान्जे जयन्तीभाई पटेल के घर संतों को भोजन के लिए निमंत्रण मिला था। पवित्र ब्राह्मण के द्वारा उन्होंने लड्डू, दाल, भात, पकौड़ी आदि सामग्री तैयार करवाई थी। समय होने पर योगीजी महाराज संतो के साथ जयंतीभाई के घर पधारे। जयन्तीभाई ने प्रभुदास सेठ आदि भज़्तों को साथ लेकर योगीजी महाराज के चरणों में भावपूर्वक निवेदन किया कि 'स्वामीजी, श्रीजीमहाराज और अक्षरब्रह्म गुणातीतानन्द स्वामी आपके वश में हैं, हमारी इच्छा है कि, आज वे स्वयं हमारे घर थाल ग्रहण करें।'

योगीजी महाराज ने हँसते हुए कहा 'आप का भाव और प्रेम है तो चलिए, हम प्रार्थना करते है कि श्रीजीमहाराज और स्वामीजी साक्षात् भोजन के लिए आपके घर पधारे।' इतना कहकर वे पूजाघर में पधारे।

ठाकुरजी के सामने भोजन का थाल रखा। चाँदी के लोटे में जल रखा और पर्दा डाल दिया। वे एक आसन पर स्थिर होकर बैठ गए। चारों ओर हरिभज़्त उनको घेरकर नैवेद्यगान में जुड गए। योगीजी महाराज ने *'अविनाशी आओ रे...'* थाल-नैवेद्यगान भावपूर्वक गाना शुरू कर दिया।

ठीक आधा घण्टा बीता होगा की योगीजी महाराज ने ठाकुरजी को आचमन कराने के लिए पर्दा हटाया। सभी उत्सुकतावश थाल में झांककर देखने लगे तो आश्चर्य चकित रह गए। थाल से पाँच लड्डु, चावल, दाल, सज़्जी सब कुछ कम हो गया था। पानी से भरा लोटा भी खाली दिख रहा था। सारे हरिभज़्त योगीजी महाराज के अनन्य भज़्तिभाव को देखकर दिग्मूढ़ रह गए, उनको विश्वास हो गया कि श्रीजी-स्वामी योगीजी महाराज के वश में हैं।

20. पराभक्ति

एकबार योगीजी महाराज बैलगाड़ी के द्वारा सारंगपुर से गढपुर जा रहे थे। निर्गुणदास स्वामी भी साथ में थे। रास्ता निर्जन और शान्त था। गर्मी के दिन थे। रास्ते में कहीं जलाशय-नदी अथवा कुआँ का नामोनिशान नहीं था। दोपहर के चार बज चुके थे।

योगीजी महाराज के पास छोटी-सी हरिकृष्ण महाराज (भगवान स्वामिनारायण) की पंचधातु की प्रतिमा थी। वे इस प्रतिमा को जल निवेदित करने के लिए व्याकुल हो रहे थे। ज़्योंकि ठाकुरजी को जगाने का समय हो चुका था। वे कहीं से भी पानी प्राप्त करने की सोच रहे थे। एक ही विचार उनको व्याकुल कर रहा था कि, 'यदि पानी नहीं मिला तो भगवान प्यासे रहेंगे, उनका गला सूख जाएगा।'

शाम के छह बज चुके थे। मार्ग में एक नदी दिखाई दी। वे जलदी से नदी के निकट जा पहूँचे। किनारे पर बैलगाड़ी खड़ी करवा दी, नीचे उतरकर ठाकुरजी की मूर्ति ठीक स्थान पर प्रस्थापित की। जल्दी से नदी में जाकर पानी निकाला, वस्त्र से छाना और शुद्ध पात्र में लाकर हरिकृष्ण महाराज के सामने रख दिया। अब मानो उनकी ही तृषा शांत हो गई।

वे भगवान के चरणों में बार-बार दण्डवत् प्रणाम करके प्रार्थना करने लगे, 'प्रभो! क्षमा कीजिएगा, मुझसे भारी अपराध हो गया है, समय होने पर भी मैं आपके लिए पानी का प्रबंध नहीं कर पाया, इसलिए मैं आपकी क्षमा चाहता हूँ।' गद्‌गद भाव से हो रही ऐसी प्रार्थना सुनकर निर्गुणदास स्वामी कहने लगे, 'योगी, हम तो सफ़र में थे, रास्ते में कहीं जल नहीं मिला, इसमें हमारा ज़्या दोष?'

परंतु योगीज महाराज तो भावनापूर्ण हृदय से बार-बार क्षमा माँगते ही रहे कैसी अद्‌भुत भज़्ति! कैसी अनुपम सेवा! कैसी विनम्रता! चलिए, हम भी ऐसी ही भज़्ति, सेवा और नम्रता के सद्‌गुण प्राप्त करें।

21. सर्प-दंश

राजकोट जिले का गोंडल शहर अक्षरब्रह्म गुणातीतानन्द स्वामी का प्रासादिक नगर है। वहाँ गुणातीतानंद स्वामी के देहोत्सर्ग के बाद उनका अग्नि संस्कार किया गया था। इस स्थान पर गोंडल के महाराजा ने 'अक्षरदेहरी' का निर्माण करवाया था। उस स्थान को खरीद कर शास्त्रीजी

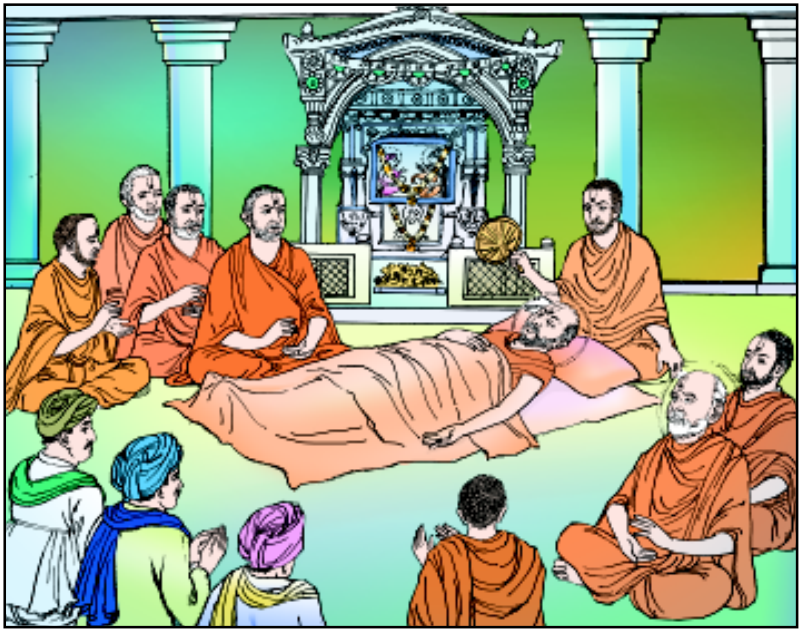

महाराज ने वहाँ एक भव्य मन्दिर का कार्य प्रारज़्भ किया। योगीजी महाराज भी मंदिर निर्माण की सेवा में जुड़े हुए थे। अक्षरदेहरी की सेवा करना उनके लिए सबसे बड़ा आनंद था। वे प्रातः चार बजे उठ जाते। नित्यक्रम से निवृज़ होकर अक्षरदेहरी में जाकर वहाँ स्थापित किये गए भगवान के चरणारविंदों की पूजा करते। आरती, नैवेद्य आदि से महापूजा भी करते।

मन्दिर निर्माण का कार्य तीव्र वेग से शुरू हो गया था। योगीजी महाराज, सन्तों के साथ मिट्टी के झोंपड़े में निवास करते थे।

एक दिन मध्यरात्री के बाद दिनभर की थकान उतारने के लिए सभी मिट्टी के कमरे में सो रहे थे। अचानक एक भयंकर काला सर्प घूमता हुआ योगीजी महाराज के बिस्तर के पास सरकने लगा। किसी को मालूम भी नहीं रहा कि अचानक सर्प ने योगीराज के बायें हाथ की पहली उँगली पर दंश दे दिया। लहू की धारा बहने लगी। साँप का ज़हर पूरे शरीर में फैलने लगा सज़्त पीड़ा हो रही थी। योगीजी महाराज की आँखें मून्द कर 'स्वामिनारायण' मंत्र का जाप करते रहे।

उनके कराहने की आवाज़ से अगल बगल में सोए हुए संत-पार्षद जाग उठे। कोई वैद्य को तो कोई डॉज़्टर को बुलाने के लिए दौड़ने लगा। शास्त्रीजी महाराज को खबर दी गई। वे तुरंत वहाँ पधारे और कहने लगे, 'योगीजी महाराज को फौरन अक्षर देहरी में ले चलो। वहाँ 'स्वामिनारायण' नाम की धुन का प्रारंभ करो, इस मन्त्र के प्रताप से ज़हरीले साँप का विष अवश्य उतर जाएगा।' सभी सन्त उन्हें लेकर अक्षर देहरी में ठाकुरजी के सामने सुलाकर धुन गान करने लगे।

बारह घण्टों तक मंत्रजाप चलता रहा। हर कोई प्रार्थन के चमत्कार को अपनी आँखों से देख रहे थे कि, किसी भी औषध के बिना योगीजी महाराज के शरीर से पूरा ज़हर उतर गया! उन्होंने आँखे खोली। शाज़ीजी महाराज को देखकर बडे आदरभाव से प्रणाम किया। महाराजा की ओर से आए सरकारी डॉज़्टर, इस चमत्कार को देखकर चकित रह गए। वे शास्त्रीजी महाराज के चरणों में गिर कर अपना आश्चर्य व्यज़्त करने लगे। जब गोंडल के महाराजा एवं उनके पदाधिकारियों ने यह बात सुनी तो वे भी अक्षरदेहरी के प्रताप की बातों से विस्मित हो गए।

22. अक्षर मन्दिर के महन्त

संवत् 1990 (सन् 1934) में गोंडल में निर्माण हो रहे स्वामिनारायण मंदिर का अधिकांश कार्य संपूर्ण हो चूका था। उसी साल वैशाख शुज़्ला दशमी के दिन शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरमन्दिर में शास्त्रोज़्त विधि पूर्वक मूर्ति प्रतिष्ठा संपन्न की। उस अवसर पर मन्दिर के विशाल चौक में बहुत बड़ी सभा का आयोजन हुआ। हज़ारों हरिभज़्तों की उपस्थिति में शास्त्रीजी महाराज ने योगीजी महाराज को गोंडल के इस मन्दिर के महन्त के रूप में घोषित किया। तथा महन्त पद के प्रतीक के रूप में उनके के गले में पुष्पमाला अर्पित की। सारी सभा ने तालियाँ बजाकर, आनन्द व्यज़्त करके उस घोषणा को बधाई दी।

अक्षर मन्दिर तो योगीजी महाराज का सर्वस्व था। उसमें भी अक्षरदेहरी तो मानो उनके प्राण के समान थे। अक्षरदेहरी की प्रदक्षिणा करते हुए वे कभी नहीं थकते। सुबह साढ़े तीन बजे उठकर सर्व प्रथम वे अक्षरदेहरी की सफ़ाई करते, चंदन-पुष्पों से श्रीहरि के प्रासादिक पत्थर में तराशकर तैयार किए हुए चरणारविन्दों की पूजा स्वयं ही करते। आरती के बाद हरिभज़्तों को कथा सुनाते। देहरी में महापूजा के समय हमेशा प्रार्थना करते कि, सत्संग विकास हो तथा संतों की संज़्या में वृद्धि हो। बही-खाते में मंदिर का हिसाब भी स्वयं ही लिखते थे। ठाकुरजी की सेवा एवं मेहमानों की सेवा-शुश्रूषा करने में भी हमेशा तैयार रहते। अधिक से अधिक संज़्या में हरिभज़्त मंदिर का लाभ उठाते रहे, इसमें योगीजी महाराज अति प्रसन्न होते। उनको भोजन कराने के बाद ही उनको बिदा देते।

राणा दाजीबापू योगीजी महाराज के सेवाकार्यों के सबसे बडें सहयोगी थे। एक दिन हिसाब के सज़्बन्ध में दाजीबापु योगीजी महाराज को कुछ पूछन के लिए वे कोठार में गए। परंतु योगीजी महाराज वहाँ उपस्थित नहीं थे, इसलिए वे अक्षरदेहरी में गए, ठाकुरजी के स्थान में गए, परंतु वे कही नहीं मिले। अंततः वे रसोईघर में पहुँचे तो योगीजी महाराज को रसोई बनाते देखा। दाजीबापू को बड़ा आश्चर्य हुआ।

इतने बड़े मन्दिर में, जहाँ कि अनेक साधु-सन्त उपस्थित हैं, और महन्त होकर रसोई बनानेवाले योगीराज कितने विनम्र हैं! उन्होंने कहाँ, 'मैं तो कब से आपको खोज रहा हूँ, और आप रसोई बनाने आ गए ! भंडारी साधु कहाँ गए?'

योगीजी महाराज ने कहा, 'आज वे बीमार हैं। श्रीजीमहाराज की कृपा से आज इस सेवा का लाभ मुझे मिला है। बहुत दिनों से सोच रहा था कि मैं भोजन पकाकर, थाल सजाकर ठाकुरजी को भोजन कराऊँ, आज मेरी वह इच्छा पूरी हुई।'

दाजीबापू आश्चर्य से इस सेवामूर्ति संत को देखते रहे। जाँच करने पर पता चला कि भंडारी बीमार नहीं थे, परंतु आलस्य के कारण सेवा में नहीं आए थे। दाजीबापु ने उनको बुलाकर कहा, 'आपको मालूम नहीं कि, योगीजी महाराज चौबीसों घण्टे सेवा करते रहते हैं, और उपर से आप उनको रसोई की सेवा में लगाकर उनका बोझ ज़्यों बढ़ाते हो ? जाइए, रसोईघर में जाकर अपना काम पूरा कीजिए। वे उन सभी को सेवा में भेजकर, दाजीबापु योगीजी महाराज को साथ लेकर हिसाब निपटाने के लिए कार्यालय में आ पहुँचे।

23. गुरुभक्ति

योगीजी महाराज रोजाना एक ही बार भोजन करते थे, हर तीसरे दिन निर्जल उपवास किया करते थे। उपवास के दिन भी वे सिर पर सामान की गठरी लेकर शास्त्रीजी महाराज के साथ एक गाँव से दूसरे गाँव विचरण करते रहते थे। दिनभर सेवा तथा अधिक परिश्रम के कारण उन्हें सारनगांठ (हर्निया) की पीड़ा होने लगी।

संवत् 1993 में राजकोट में अंग्रेज डॉकटर एस्पिनॉल को बताया गया। उन्होंने कहा, 'योगीराज को ऑपरेशन अनिवार्य है।' शास्त्रीजी महाराज की आज्ञा के अनुसार हीरजीभाई ने सरकारी अस्पताल में अलग कमरे की व्यवस्था करवाई।

शास्त्रीजी महाराज भी उस समय गोंडल में अपना औषधोपचार करवा रहे थे। वे एक दिन पहले ही राजकोट आ गए थे। मार्गशीर्ष मास

की भयंकर ठंड में भी तड़के उठकर, स्नानादि से निपटकर, माथे पर पगड़ी रखकर वे जल्दी से अस्पताल जा पहुँचे। शास्त्रीजी महाराज जिस समय अस्पताल में दाखिल हुए, उसी समय दो सेवक योगीजी महाराज को स्ट्रेचर में सुलाकर ऑपरेशन थियेटर में ले जा रहे थे।

अपने गुरु को एन मौके पर अपने पास उपस्थित देखकर योगीजी महाराज पुलकित हो उठे। लेटे हुए ही हाथ ऊँचा करके उन्होंने प्रणाम किया। शास्त्रीजी महाराज ने उनको आशीर्वाद दिए। योगीजी महाराज को ज़्लॉरोफॉर्म (बेहोशी की दवाई) देकर डॉज़्टरों ने उनका कुशलतापूर्वक ऑपरेशन संपन्न किया।

योगीराज की सुचना के अनुसार अस्पताल के कमरे में एक टेबल पर ठाकुरजी की मूर्ति प्रस्थापित की गई थी। चारों ओर अनेक हरिभज़्त नीचे बैठकर दर्शन कर रहे थे। शास्त्रीजी महाराज कुर्सी पर बैठकर माला फेर रहे थे। दो घण्टों के बाद योगीजी महाराज संपूर्ण होश में आ गए। उन्होंने अपना माथा थोड़ा-सा हिलाया, आँखें खोलीं, शास्त्रीजी महाराज बिल्कुल सामने बैठे मुस्कुरा रहे थे। योगीजी महाराज ने उनको देखते ही तुरन्त हाथ जोड़े और हरिभज़्तों से पूछने लगे, 'शास्त्रीजी महाराज को दूध पिलाया?'

ऐसी हालात में यह प्रश्न सुनते ही सारे हरिभज़्त और अंग्रेज डॉज़्टर एस्पिनॉल आश्चर्यचकित रह गए। उनको महसूस हुआ कि 'ये साधु बेहोश नहीं थे, ये तो योगी पुरुष हैं, वे समाधि में ही रहे होंगे, अन्यथा जागृत होते ही गुरु का स्मरण कैसे हो आता?'

गोंडल में योगीजी महाराज शास्त्रीजी महाराज की सेवा में थे। उन्हें दवाई-दूध आदि दिया करते थे, यह सब बेहोशी में भी वे भूले नहीं थे। कितनी एकता! कितनी गुरुभज़्ति!

24. शास्त्रीजी महाराज प्रकट हैं

संवत् 2007 में (सन् 1951) में शास्त्रीजी महाराज का स्वास्थ्य बहुत गिर गया था। एक दिन सारंगपुर में बिराजमान थे तब उन्होंने कहा कि 'मैं ने गढ़डा में निर्माण हुए स्वामिनारायण मंदिर की मूर्तियों की आरती कर चूका हूँ। परंतु मूर्तियों की प्रतिष्ठा करना बाक़ी है, जो योगीजी महाराज के

हाथों से संपन्न होगी। आप सब निश्चितरूप से जान लीजिए कि, मुझमें और योगीजी महाराज में तिलभर भी फ़र्क़ नहीं है, मुझमें योगीजी हैं और मैं योगीजी में हूँ।' ये थे उनके आखिरी शज़्द।

वैशाख शुज़्ला चतुर्थी के दिन वे उन्होंने अपनी शरीरलीला समेट ली। दूसरे दिन उनकी भौतिक देह का अग्निसंस्कार किया गया। सारा सत्संग समुदाय तीव्र आघात के कारण शोकग्रस्त था। सभी सोच रहे थे कि 'शास्त्रीजी महाराज गए, अब हमारा ज़्या होगा?' किसीको कुछ भी नहीं सूझ रहा था।

उस समय योगीजी महाराज ने सांत्वना देते हुए सबको कहा कि 'शास्त्रीजी महाराज गए नहीं हैं, हमें यह मानना ही नहीं चाहिए कि, वे हमें छोड़कर चले गए। वे तो हमारे साथ प्रकट ही हैं।'

उनके शज़्दों में नई ऊर्जा थी। प्रतीति की ऐसी खनक सुनकर सबको सांत्वना मिली कि 'श्रीजीमहाराज जिस तरह शास्त्रीजी महाराज में प्रकट थे, उसी तरह आज भी योगीजी महाराज के द्वारा इस सत्संग में प्रकट हैं। शास्त्रीजी महाराज अब योगीजी महाराज के रूप में बिराजमान होकर हमारा कल्याण करेंगे।' सभी के ज्ञानचक्षु खुल गए, सभी ने योगीजी महाराज को गुरु के रूप में स्वीकार किया।

शास्त्रीजी महाराज के देहोत्सर्ग के बाद छठे दिन अर्थात् संवत् 2007 की वैशाख शुज़्ला दशमी को गढ़डा में योगीजी महाराज के तज़्वावधान में बड़ी धूमधाम से मूर्ति प्रतिष्ठा का समारोह मनाया गया गया। करीब पचास हज़ार हरिभज़्त वहाँ उपस्थित रहे। 'शास्त्रीजी महाराज योगीजी महाराज में प्रकट हैं' इस बात की सबको प्रतीति हुई।

कुछ विरोधी लोग सोच रहे थे कि 'शास्त्रीजी महाराज के बाद अक्षरपुरुषोज़म संस्था तथा संस्था के द्वारा प्रसारित हुए सिद्धांत बहुत ही कम समय में समाप्त हो जाएगा...। न तो उनके उत्सव में कोई आएगा अथवा न तो उनके द्वारा संपन्न होते पारायण अथवा कथा प्रसंग कोई उपस्थित होगा।' परंतु उन द्वेषियों के अनुमान बिल्कुल निर्मूल साबित हुए। गढ़डा में योगीजी महाराज के सांनिध्य में हज़ारों लोग उमड़ पड़े। इस उत्सव से ही योगीजी महाराज के विशाल कार्य का प्रारज़्भ हो गया। उन्होंने सभीके दिलों में स्थान पा लिया।

25. युवक मण्डल और सत्संग सभा

साप्ताहिक सत्संग सभा की प्रवृज़ि योगीजी महाराज ने बहुत समय पहले ही शुरू कर दी थी। शास्त्रीजी महाराज के अक्षरधाम गमन के बाद उन्होंने उस प्रवृज़ि को अत्यंत वेग दिया। युवक मण्डलों की स्थापना तथा विकास की प्रवृज़ियाँ भी बहुत जोरों से चलने लगीं।

प्रारंभ में साप्ताहिक सभा में एकत्र होनेवाले युवकों की संज़्या बहुत कम थी, इसलिए आनेवाले युवक भी निराश हो जाते थे। ऐसे समय योगीजी महाराज उनको आश्वासन देते हुए बड़े प्यार से कहते थे, 'आपको धीरज और हिज़्मत रखना हैं। हम तो भगवान की आज्ञा के पालन में ही कल्याण मानते है, इसलिए आप आज्ञा के अनुसार सत्संग सभा करते चले। आनेवाले समय में युवक मंडलों का विकास आसमान को छुएगा। इस प्रवृज़ि का बहुत विकास होगा। आपको अपने नये मित्रों को, युवकों को प्रेरणा देनी है, उन्हें साथ लेकर सत्संग सभा में आना, उनको कथा-वार्ता में दिलचस्पी बढाना। अध्यात्म की ये बातें उनके मन में बैठ गईं तो वे अपने आप आते रहेंगे। श्रीजीमहाराज की दया से युवकों की संज़्या बहुत बढ़ेगी।'

कुछ केन्द्र में कारणवश यदि युवक मण्डल की प्रवृज़ि स्थगित हो जाती तो वे उसे पुनः चालू करवाते। जिस गाँव या शहर में वे पधारते, वहाँ सर्वत्र युवक मण्डलों की स्थापना करते रहते। उसका विवरण रखते, नियमित पत्र लिखकर उनको प्रोत्साहित करते। इस तरह कुछ ही समय में सारे भारतवर्ष में सैकड़ों युवक मण्डलों की स्थापना हो गई। छोटे-छोटे बच्चों को सत्संग का ज्ञान-लाभ मिले इस दृष्टि से जगह-जगह पर उन्होंने बाल मण्डलों की स्थापना भी बड़ी संज़्या में की।

योगीजी महाराज कई बार कहते कि 'यदि पच्चीस हज़ार रुपये का मुनाफ़ा हो रहा हो, तो उसे भी छोड़कर युवक मण्डल तथा सत्संग मण्डल की सभा चूकना नहीं चाहिए। हम, सभी को मिलने के लिए उनके घर तो जा नहीं सकते। परंतु सत्संग सभा में आने के कई लाभ होते हैं, जैसे कई हरिभज़्तों के एक साथ दर्शन होते हैं, अनेक युवकों के साथ मिलना होता है, उनसे गहरी मित्रता होती है और साथ-साथ ज्ञान एवं प्रेरणा भी प्राप्त

होती है। ऐसी सत्संग सभाओं में श्रीजीमहाराज, गुणातीतानन्द स्वामी एवं शास्त्रीजी महाराज अपने दिव्य रूप से बिराजमान होते हैं। इसलिए हमें सभा में कभी भी अनुपस्थित नहीं रहना चाहिए।'

योगीजी महाराज युवकों की ऐसी प्रवृज़ियों में स्वयं रुचि लेते थे। प्रवचन, योगासन, बैण्डवादन, संवाद, रास-नृत्य, भजन-कीर्तन आदि युवकों के व्यज़्तित्व का विकास करने वाली हर प्रवृज़ियों का प्रारंभ उन्होंने अपनी वात्सल्यपूर्ण प्रतिभा से संपन्न किया। जबभी युवक याँ बालक अपनी ओर से कुछ कला पेश करता, तो वे उसे बहुत प्रेम पूर्वक एकाग्रता से सुनते और देखते। उन्हें आशीर्वाद देते तथा प्रोत्साहित करते। युवकों के द्वारा तैयार हुए हस्तलिखित साहित्य को भी वे बहुत ध्यानपूर्वक सुनते और कहते कि 'ऐसे हस्तलिखित अंक तो हमें हर तीन महीने पर निकालते रहना चाहिए।'

हमें भी प्रत्येक सत्संग सभा में अवश्य जाना चाहिए ताकि, योगीजी महाराज की प्रसन्नता में वृद्धि हो तथा हमें उनका आशीर्वाद मिले।

26. युवकों के योगीराज

योगीजी महाराज को युवकों और बच्चों से बहुत प्यार था, दिल के टुकड़े की तरह वे उनकी हिफाज़त करते थे। वे उनको प्रेम से पुकारते, उनकी बातें रुचिपूर्वक सुनते, उनके सिर पर हाथ फेरते। साथ-साथ यह भी देख लेते कि कण्ठी-माला उनके गले में है या नहीं, यदि न हो तो पहना देते। माता से भी अधिक प्यार करके वे उनको वश में कर लेते थे।

योगीजी महाराज गर्मी की एवं दिवाली की छुट्टियों में युवकों को साथ लेकर एक गाँव से दूसरे गाँव विचरण करते रहते। उनको गुणातीतानन्द स्वामी का उपदेशामृत, वचनामृत, भजन-कीर्तन, नियम-चेष्टा के पद आदि सुनाते तथा सिखलाते। अपने दोनों ओर दो युवकों को साथ रखते, उनके हाथ पकड़कर चलते और कहते, 'दोनों ओर दो युवक, और बीच में योगी युवक!'

वे अपने साथ में विचरण करनेवाले युवकों की देखभाल माँ की तरह किया करते थे। उनको स्वयं परोसते, उनका बिछौना बिछा देते। यदि कोई बीमार पड़ गया तो स्वयं ही उसकी सेवा-शुश्रूषा करने लगते।

स्वयं सुबह साढ़े चार बजे उठकर युवकों को जगाते, उनके साथ आज्ञा, उपासना एवं सेवा की बातें करते। जो युवक निर्जल उपवास करता उस पर तो वे अति प्रसन्न रहते। उसे धन्यवाद तथा आशीर्वाद देते। रात को ग्यारह बजे सभा की समाप्ति और नियम-चेष्टा हो जाने के बाद भी वे युवकों को साथ लेकर गोष्ठि के लिए बैठ जाते, और युवकों को आपस में गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी आदि भाषाओं में प्रश्नोज़री करवाते। युवकों को बोलते हुए देखकर वे इतने खुश होते कि स्वयं कुछ अंग्रेजी शज़्द बोलकर युवकों को खुश कर देते।

कॉलेज में अध्ययन करनेवाले नवयुवकों को वे बड़ी आसानी से अपने वश कर लेते। सिगारेट, पान, सिनेमा, नाटक आदि दुर्व्यसनों से उन्हें मुज़्त करते। सादगी और संयम से जीने की प्रेरणा देते। आदर्श भारतीय नागरिक बनाते। इस तरह छुट्टी के दिनों में भी वे प्रतिवर्ष युवकों को साथ लेकर घूमते और बिदाई के समय उनको उपदेश देते कि 'धर्म-नियम का पालन करना, युवक मण्डल में नियमित जाना, तुज़्हारे गाँव में यदि युवक मण्डल न हो तो स्थापित करना। हम तुज़्हारे साथ नियमित पत्रव्यवहार करेंगे।' इतना कहकर वे उनको बिदा देने के लिए मन्दिर के दरवाजे तक चले जाते।

प्रेममूर्ति योगीजी महाराज से अलग होते समय युवकों की आँखें श्रद्धा से आँसूओं से भीग जाती थीं।

27. युवकों को दीक्षा

केवल दस वर्षों में योगीजी महाराज ने युवकों का एक सुन्दर वृन्द तैयार कर लिया था। उनके लिए योगीजी महाराज की आज्ञा अज़्सर यही रहती कि अपने घर पर भी वे सादगी से जीएँ। प्रति पाँच दिनों के बाद उपवास करें, बिना सिरहाने वे चटाई पर ही सोएँ, ठण्डे जल से स्नान करें, तिलक लगाएँ, बाजारू चीज़ें नहीं खाएँ, सिनेमा-नाटक कभी मत देखें।

योगीजी महाराज के ऐसे उपदेश से कई सुशिक्षित नवयुवक त्यागी बनने के लिए तैयार हो जाते। वे हंमेशा अपने निकट आनेवाले युवक के सिर पर हाथ फेरकर बड़े प्रेमभाव से पूछते, 'ज़्यों?

हमें आपको बनाना है, बनोगे न?' उनके प्रेमभरे इन गूढ़ शज़्दों को

सुनकर सुशिक्षित अनेक युवक उनके चरणों में हमेशा के लिए समर्पित होने के लिए तैयार हो जाते।

साधु होने की प्रबल इच्छावाले एक युवक को योगीजी महाराज ने पत्र में लिखा था कि 'तुज़्हें साधु बनाकर मैं तुमसे अपनी सेवा करवाना नहीं चाहता, मैं तो तुज़्हें ब्रह्मविद्या सिखलाकर तुमसे एकान्तिक धर्म सिद्ध करवाना चाहता हूँ; तुज़्हारा आत्यन्तिक कल्याण हो ऐसी स्थिति बनाना चाहता हूँ; तुज़्हारे द्वारा लाखों को सत्संग का लाभ मिले; तुम अक्षरपुरुषोज़म सिद्धांत तथा शास्त्रीजी महाराज की सेवाभावना को सारे जगत में फैलाओ, बस, यही मेरी कामना है।'

ऐसे कईं युवकों के माँ-बाप ने योगीजी महाराज के उस महान उद्देश्य को समझकर हँसते हुए अपने लाड़ले पुत्रों को उनके चरणों में समर्पित कर दिया था। कॉलेज की पढ़ाई सज़्पन्न करने वाले युवकों का एक बड़ा समूह उन दिनों त्यागी दीक्षा लेने के लिए लालायित रहता था।

संवत् 2017 (सन् 1961)की वैशाख कृष्णा द्वादशी के दिन योगीजी महाराज की इकहज़रवीं जन्मजयंती के उपलक्ष्य में गढ़पुर मन्दिर के शिखरों पर सुवर्ण कलशों की स्थापना हुई। उस अवसर पर योगीजी महाराज ने 51 नवयुवकों को भागवती दीक्षा देकर साधु बनाया। अक्षरपुरुषोज़म सज़्प्रदाय के आध्यात्मिक इतिहास में यह दिवस सुनहरे अक्षरों में अंकित हो गया। सुवर्णकलशों की स्थापना और इतने शिक्षित युवकों को साधुदीक्षा देने का विक्रम वहाँ एक ही दिन में सज़्पन्न हुआ था! ऐसा अवसर भगवान स्वामिनारायण के बाद पहले कभी नहीं हुआ था। इसका सारा यश योगीजी महाराज के चरणों में ही समर्पित हुआ।

इसके बाद तो यह सिलसिला जारी ही रहा। देश के और अफ्रीका के नैरोबी, मोज़्बासा तथा ईंग्लेण्ड के लंदन आदि शहरों से आए कई पढ़े-लिखे युवकों ने योगीजी महाराज से त्यागि दीक्षा की। सत्संग के प्रचार में एक ज्वार-सा आया। यह युवान सन्त मंडल देश-विदेशों में घूम फिरकर सज़्प्रदाय के सिद्धांतों तथा भारतीय परंपरा के मूल्यों का प्रचार करने लगे। नवयुवकों ने योगीजी महाराज के इस महान कार्य में अपने आपको समर्पित कर दिया।

28. योगीजी महाराज का कार्य

अक्षरपुरुषोज़म सज़्प्रदाय के प्रचार एवं प्रसार के लिए योगीजी महाराज ने मानो कमर कस ली थी। वे रात-दिन की परवाह किये बिना गाँव-गाँव घूमने लगे थे। वे जहाँ जाते, वहाँ उनका भारी सज़्मान होता था। सत्संगी होने के लिए 'वर्तमान विधि' धारण करवाने के लिए मुमुक्षुओं की लज़्बी कतारें लग जाती थीं। उत्सवों और सत्संग समारंभों की परंपरा चल निकली थी।

सत्संगियों का समुदाय भी काफ़ी बढ़ता जा रहा था। योगीजी महाराज गाँव-गाँव में सत्संग मण्डलों की स्थापना कर रहे थे। पूरा तंत्र सुव्यवस्थित रूप से चलता रहे, इसीलिए वे बार-बार पत्रों के द्वारा मार्गदर्शन देते रहते थे।

दो बार तो 'अखिल भारतीय यात्रा ट्रेन' का आयोजन करके सन्तों हरिभज़्तों को पूरे देश की यात्रा करवाई अथवा यों कहिए कि योगीजी महाराज ने कईं तीर्थ पावन किए। कई मुमुक्षुओं को सत्संग की ओर आकृष्ट किया। हरिभज़्तों को आज्ञा करके, सरकार को सिफारिश करके 'छपिया स्वामिनारायण' नामका रेलवे स्टेशन शुरू करवाया। इसी कारण छपिया गाँव में योगीजी महाराज का भव्य स्वागत हुआ था।

शास्त्रीजी महाराज के संकल्प-अनुसार योगीजी महाराज ने संवत् 2010 (सन् 1954) में बज़्बई में 'अक्षरभुवन' नाम से सुन्दर मन्दिर स्थापित किया। उसी साल वैशाख शुज़्ला सप्तमी को अहमदाबाद (शाहीबाग) में तीन शिखरीय भव्य मन्दिर का निर्माण करके सुन्दर मूर्तियों की प्रतिष्ठा की। अपने गुरुवर शास्त्रीजी महाराज के जन्मस्थान महेलाव गाँव में सुन्दर मन्दिर का आयोजन किया। जन्मस्थान पर ही शास्त्रीजी महाराज की संगेमरमर की प्रतिमा की प्रतिष्ठा की।

स्वामीश्री अद्‌भुत कार्यों से प्रेरित होकर संत-हरिभज़्तों ने संवत् 2012 (सन् 1956) के वैशाख कृष्ण द्वादशी को योगीजी महाराज का 65 वाँ जन्मोत्सव सारंगपुर में धूमधाम से मनाया, जहाँ एक लाख हरिभज़्त ने एकत्रित होकर योगीजी महाराज के यशोगान गाए थे।

संवत् 2021 में (दि. 6-2-1965) शास्त्रीजी महाराज को प्रकट हुए सौ वर्ष पूर्ण हो रहे थे। योगीजी महाराज की उम्र उस समय चौहज़र वर्ष की थी, शरीर की अस्वस्थता के बावजूद वे गुरुजी के शताज़्दी उत्सव के निमिज़ सर्दी के मौसम में 38 दिनों में 82 गाँवों में विचरण करके गुरुमहिमा का प्रचार करते रहें तथा लोगों को सेवा के लिए प्रेरित करते रहे। इस उत्सव में हरिभज़्तों लाखों रुपये ठाकुरजी के चरणों में समर्पित किए।

गुरु पर अपार भज़्तिभाव और श्रद्धा के कारण उनकी जन्मजयन्ती को निमिज़ बनाकर योगीजी महाराज ने शरीर की परवाह किए बिना अत्यंत कष्ट उठाया और संवत् 2021 (सन् 1965) की माघ शुज़्ला वसंतपंचमी के दिन अटलादरा गाँव में बड़ा भव्य समारोह संपन्न किया। इस उत्सव में उपस्थित डेढ़ लाख हरिभज़्तों ने उनसे गुरुभज़्ति की अपार महिमा सुनी। सद्विद्या की प्रवृज़ि के हेतु विद्यानगर एवं गोंडल में छात्रालय तथा गुरुकुल की स्थापना की। गोंडल में प्राथमिक और माध्यमिक शालाओं का प्रारंभ भी किया गया।

योगीजी महाराज की 76 वीं जन्मजयन्ती को अमृत महोत्सव के रूप में गोंडल में मनाने का निर्णय लिया गया। देशविदेश के लाखों हरिभज़्तों ने श्रीहरि के अखण्ड धारक इन महापुरुष के अमृत महोत्सव पर उनके अलौकिक कार्यों का स्मारक ग्रन्थ 'अमृतपर्व' का प्रकाशन किया गया। गोंडल में शानदार उत्सव मनाया गया। उस अवसर पर योगीजी महाराज ने संस्था के द्वारा अकाल पीड़ित जनता को अन्नदान देने के लिए सरकार को पच्चीस हज़ार रुपये समर्पित करवाएँ। गोंडल में मनाए गए इस उत्सव में उपस्थित दो लाख हरिभज़्तों ने उनके गुणगान गाए। दुनियाभर से हरिभज़्त समुदाय इस अवसर पर उपस्थित था।

अक्षरब्रह्म गुणातीतानन्द स्वामी के जन्मस्थान भादरा गाँव (जिला : जामनगर) में सभी हरिभज़्तों के साथ श्रमयज्ञ करके 'गुणातीत नगर' स्टेशन का निर्माण करवाया। .

संवत् 2025 (सन् 1969) वैशाख शुज़्ला षष्ठी के दिन गुणातीत नगर में उनके जन्मस्थान पर, एक शिखर का सुन्दर मन्दिर बनवाकर उसमें धाम, धामी और मुज़्त की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित कीं।

भगवान स्वामिनारायण के द्वारा परमहंसों को पत्रों के रूप लिखे कुछ सिद्धांतिक वचनों के संकलन का ग्रंथ 'वेदरस' स्वामीश्री के द्वारा पुनः प्रकाशित हुआ। तथा अपने गुरु शास्त्रीजी महाराज और उनके गुरु भगतजी महाराज के जीवनचरित्र के ग्रन्थ भी तैयार करवाएँ। गुरुजी की जन्म-शताज़्दी के निमिज़ 'यज्ञपुरुष स्मृति' नामक ग्रन्थ प्रकाशित करवाया। अक्षरब्रह्म गुणातीतानन्द स्वामी का प्रसादीभूत तथा अचिन्त्यानन्द - वर्णीकृत 'हरिलीलाकल्पतरुः' नामक महाग्रन्थ छपवाकर उन्होंने प्रसिद्ध किया।

श्रीजीमहाराज का जीवन-दर्शन और वचनामृत उन्होंने हिन्दी और अंग्रेजी में तैयार करवाए। गुणातीतानन्द स्वामी का सज़्पूर्ण जीवन-वृज़ान्त गुजराती में प्रसिद्ध किया।

शास्त्रीजी महाराज के द्वारा संस्थापित 'स्वामिनारायण प्रकाश' सामयिक का खूब प्रचार किया, घर-घर में हरिभज़्तों के हाथ में 'प्रकाश एवं पत्रिका' पहुँचा दी। प्रत्येक केन्द्र में रविवार के दिन सत्संग सभा होती थी। सभी को सत्संग सज़्बन्धी नियमित मार्गदर्शन मिलता रहे इस दृष्टि से 'स्वामिनारायण सत्संग पत्रिका' नामक एक साप्ताहिक पत्रिका शुरू की।

उनसे दीक्षा लेनेवाले नवयुवक सन्तों को संस्कृत का उच्च अध्ययन कराने के लिए उन्होंने मुंबई में 'संस्कृत पाठशाला' की स्थापना की। विद्वान संत भी तैयार किए। उनकी प्रेरणा एवं आशीर्वाद से कई सन्तों ने 'शास्त्री' एवं 'आचार्य' की उपाधि प्राप्त की। कुछ सन्त तो भारत सरकार की शिष्यवृज़ि पाकर 'वाचस्पति' (पीएच.डी.) भी हुए। कुछ युवान सन्तों को संगीत में पारंगत करवाया इसका पूरा यश योगीजी महाराज को ही समर्पित है।

उन्होंने सैकड़ों हरिमन्दिर बनवाए। सैकड़ों कथायज्ञ एवं ज्ञानशिविर का आयोजन करके लाखों शिष्यों को सत्संग का लाभ दिया। लाखों की संज़्या में नए सत्संगी बनाए। सत्संग का खूब विकास किया।

योगीजी महाराज की यह महानता थी कि सभी धर्मों के सन्त-महन्त और आचार्य लोग उनका अत्यंत आदर करते थे। केवल इतना ही नहीं, उनके आशीर्वाद तथा उनसे मार्गदर्शन लेने के लिए उनके पास आते रहते थे। उनका यह कहना था कि 'योगीजी महाराज केवल स्वामिनारायण सज़्प्रदायवालों के ही नहीं; परन्तु सबके हैं, समग्र विश्व के हैं।'

इसका कारण यह था कि वे सबको सज़्मान देते थे, सर्व-धर्म समभाव रखते थे। किसी व्यज़्ति या किसी धर्म की कभी निन्दा नहीं करते थे, किसीसे निन्दा सुनते भी नहीं थे। हमारे देश में और अफ्रीका में कई बार राममन्दिरों में, शिवालय में, देवी मन्दिरों में, सिज़्खों के गुरुद्वाराओं में, जैनों के देरासरों में, इसाईंयो के चर्चों में और कितने ही धर्माश्रमों में वे नि:संकोच गए हैं और सभी धर्मों के प्रति उन्होंने अपना आदरभाव व्यज़्त किया था।

योगीजी महाराज ने लाखों विधर्मियों को स्वामिनारायण के आश्रित बनाएँ थे। किसी भी धर्म या सज़्प्रदाय का व्यज़्ति हो, उनके सज़्पर्क में जो भी आता, वह श्रद्धा से नतमस्तक हो जाता, तथा सत्संगी भी हो जाता। उन्होंने कई जैन, सिज़्ख, पारसी, मुसलमान, अफ्रीका के बाशिंदे-नेटिव, यूरोपियन आदि कई परधर्मी एवं परभाषाभाषी सज्जनों को सत्संगी बनाया है। इससे यह पता चलता है कि योगीजी महाराज का व्यज़्तित्व कितना महान था।

मूल्यों, सिद्धांतों और स्वधर्म का बलिदान देकर, कई लोग सामाजिक सेवाओं का काम करते हैं, जिससे न तो उनको पूरी सफलता मिलती है और न तो उनके काम शोभा देते हैं। योगीजी महाराज ने अष्टांग ब्रह्मचर्य के साथ धन का हृदयपूर्वक त्याग किया था, जीवन के अन्त तक वे इन दोनों के त्याग में सुदृढ़ रहे। जीवनभर भगवान स्वामिनारायण की अल्प दिखनेवाली आज्ञा का भी यथार्थ पालन किया था, तभी वे इतने अद्‌भुत और ऊँचे कार्य सज़्पन्न कर पाए। उनको सफलता भी मिली, यश भी मिला। समस्त जनसमाज में वे आदरणीय और प्रात:स्मरणीय बने।

29. अँधेरे खण्ड को उजाला दिया

अफ्रीका के हरिभज़्तों के प्रेमाग्रह के वश होकर संवत् 2012 (सन् 1955) में योगीजी महाराज सर्वप्रथम अफ्रीका और एडन के प्रवास के लिए पधारे। मोज़्बासा के भव्य मन्दिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करके अक्षरपुरुषोज़म महाराज की स्थापना की। टरोरो गाँव में (युगान्डा) मुज़्तराज मगनभाई के समाधिस्थान पर चरणारविन्द स्थापित किए। हज़ारों नए सत्संगी बनाए। उत्सवों के द्वारा कितने स्थानों को तीर्थरूप किया। हज़ारों मीलों की यात्रा करके अफ्रीका जैसे अँधेरे खण्ड को उजाला दिया।

अफ्रीका में अनेक युवक-मण्डलों और सत्संग-मण्डलों की स्थापना हुई। निरन्तर उनके स्नेहपूर्ण पत्रों के प्रवाह से हरिभज़्तों में सत्संग का रंग चढ़ता ही गया। इतना रंग चढ़ा कि कंपाला, जींजा और टरोरो में मन्दिर तैयार हो गए। इन मन्दिरों में मूर्तिप्रतिष्ठा करने के लिए फिर से अफ्रीका पधारने की, वहाँ के हरिभज़्तों ने योगीजी महाराज से विनती की।

इसीलिए संवत् 2016 में (सन् 1960) योगीजी महाराज पुनः अफ्रीका तथा एडन पधारे। कंपाला, जींजा और टरोरो गाँव में उन्होंने मन्दिरों का निर्माण करके मूर्तिप्रतिष्ठा संपन्न की। इस धर्मयात्रा में पैंतीस हज़ार मीलों की यात्रा से सात देशों के कुल एक सौ तीन गाँवों में विचरण किया। हज़ारों मुमुक्षुओं को सत्संग की ओर आकर्षित किया। अफ्रीका में उज़रोज़र सत्संग बढ़ने लगा। युरोप के देशों में - लंदन, अमरीका और केनेडा में सत्संग के बीज बोए गए। धीरे-धीरे वहाँ सत्संगियों की संज़्या बढ़ने लगी। अफ्रीका में गुलु और नैरोबी के हरिभज़्तों ने बहुत बड़ी ज़मीन खरीदकर विशाल मन्दिर बनवाये। हरिभज़्तों ने तीसरी बार प्रार्थनाएँ शुरू कीं। भज़्तवत्सल गुरुहरि ने नाजुक और नादुरस्त तबियत होते हुए भी उनकी प्रार्थना का स्वीकार किया और तीसरी बार अफ्रीका जाने का निर्णय किया।

संवत् 2026 में (सन् 1970) योगीजी महाराज तीसरी बार विदेशयात्रा के लिए रवाना हुए। नैरोबी के राजमार्ग पर बने मन्दिर में मूर्ति प्रतिष्ठा की। आखिरी यात्रा में वहाँ के हरिभज़्तों को प्रसन्न किया।

लंदन के हरिभज़्तों ने स्वामीश्री प्रेरणा इज़्लींग्टन विस्तार में एक पुराना चर्च खरीदकर उसे भारतीय मन्दिर का रूप दे दिया इस नूतन मन्दिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करने के लिए लंदन पधारने के लिए योगीजी महाराज को आमंत्रण दिया गया। लंदन में बसे हज़ारों सत्संगियों की भावना के वश होकर स्वामीश्री ने आमंत्रण का स्वीकार किया और वे लंदन पधारे। वहाँ के राजमार्ग पर पुलिस बैण्ड के साथ बड़ी धूमधाम से स्वागत-यात्रा निकाली गई। लंदन के मध्यभाग इज़्लींग्टन में बने मन्दिर में प्राण प्रतिष्ठा हो गई। स्वामीजी ने कई विदेशियों को सत्संग की ओर अभिमुख किया। लंदन की थेज़्स नदी में ठाकुरजी को स्नान कराकर मानो थेज़्स को गंगातुल्य पवित्र किया। लगातार दो महीने लंदन में रहकर सत्संग

के प्रचार करके वे भारत वापस लौटे। अमरीका में सत्संग के प्रचार का काम जारी रखने के लिए उन्होंने चार विद्वान सन्तों को अमरीका भी भेजा।

30. स्वागत और बिदाई

पूरे पाँच महीने अफ्रीका तथा ईंग्लैंड के हरिभज़्तों को सत्संग विषयक पुष्टि देकर योगीजी महाराज पुन: भारत पधारे। उस समय भारत के अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं के अखबारों ने उनके कार्य की काफ़ी प्रशंसा की। जगह-जगह पर उनके यशोगान गाए गए। एशिया के तत्कालीन सबसे बड़े सभागृह-मुंबई के षण्मुखानन्द हॉल में उनका भव्य सज़्मान किया गया तथा सज़्मान-पत्र अर्पित किया गया। उस समय स्वामी चिन्मयानन्दजी ने कहा कि 'हमारे युवक जब पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण कर रहे हैं, ऐसे समय में हमारे इन सन्तपुरुष ने केवल धर्म के प्रचार के लिए ही इतनी वृद्ध उम्र में भी विलायत तक का प्रवास किया, धर्म और नीति के संस्कार दिए - यह वास्तव में प्रशंसनीय बात है।'

बड़ौदा में भी स्वामीजी का भव्य सज़्मान किया गया।

गुजरात राज्य के तत्कालीन पाटनगर अहमदाबाद में योगीजी महाराज की सज़्मान यात्रा के एक मील लज़्बे दृश्य दिखाई दे रहे थे। केन्द्रस्थान पर बिराजमान योगीजी महाराज के दर्शन के लिए कम से कम छ: लाख लोगों की संज़्या उमड़ पड़ी थी। शहर के प्रसिद्ध टैगोर हॉल में हुई सभा में गुजरात के तत्कालिन मुज़्यमंत्री श्री हितेन्द्रभाई देसाई, अन्य मंत्रीगण एवं विविध सज़्प्रदाय के सन्त-महन्तों ने एक साथ बड़े आदर से अभिवादन किया।

इस अवसर पर मुज़्यमंत्री श्री हितेन्द्रभाई देसाई ने कहा था, 'योगीजी महाराज का सज़्मान अर्थात् भारतीय संस्कृति का, सच्चे सनातनी महामानव का सज़्मान है। योगीजी महाराज का सज़्मान तो समस्त मानवजाति के समुद्धारक का सज़्मान है। आज भारत में और इतर देशों में चारों ओर अशान्ति जो साम्राज्य फैला है, उस अशान्ति का मिटानेवाले शान्तिदाता सन्त के रूप में हम योगीजी महाराज का सज़्मान कर रहे हैं।'

इसी प्रकार गुजरात के विभिन्न शहरों लीमड़ी, गढ़डा, भावनगर, महुवा, अमरेली, राजकोट, गोंडल आदि स्थानों पर भी उनका भज़्तिपूर्ण सज़्मान हुआ।

इतने बड़े-बड़े सज़्मान समारज़्भों के दौरान वे अपनी गुरुभज़्ति और कर्तव्य परायणता को कभी नहीं भूले। शास्त्रीजी महाराज के संकल्प के अनुसार उन्होंने सारंगपुर में तैयार हुए नूतन सुवर्ण सिंहासन में ठाकुरजी की आरती उतारी। भावनगर में तो मुसलाधार वर्षा होते हुए भी उन्होंने मन्दिर का शुभ भूमिपूजन संपन्न किया। उसी तरह महुवा में शास्त्रीजी महाराज के गुरु भगतजी महाराज के जन्मस्थान पर तैयार किए गए मन्दिर में मूर्ति प्रतिष्ठा की।

समस्त भारत के राजपुरुषों, शिक्षणशास्त्रियों, सामाजिक कार्यकरों, सन्तों, विविध धर्मों के महन्तों, उद्योगपतियों, डॉज़्टरों, वकीलों, देशसेवकों और नाना प्रकार के विभिन्न विशिष्ट व्यज़्तियों ने उनके कार्यों की, उनकी धर्मनिष्ठा की मुज़्त कण्ठ से प्रशंसा की।

आखिरी तीन महीने वे गोंडल में रहे। वहाँ शरदपूर्णिमा के उत्सव के दिन अक्षरदेहरी के पीछे संगमरमर के सुन्दर सिंहासन पर गुरु शास्त्रीजी महाराज की भव्य प्रतिमा की विधिपूर्वक पूजा की। गोंडल में रहकर सबकी मनोकामनाएँ पूरी कीं। सभी हरिभज़्तों को गोंडल बुलाकर उनसे मिले, उनको आशीर्वाद दिए। अनेक प्रकार के छोटे-बड़े उत्सव करके सबकी स्मृति में हमेशा के लिए स्थान पा लिया।

फिर एक दिन वे अचानक रोगग्रस्त हो गए। उनकी अगज़्य लीला को कोई भी समझ न सका। रोग बढ़ता गया। विशेष उपचार के लिए उनको मुंबई लाना जरूरी था।

वे मुंबई पधारे और संवत् 2027 की पौष कृष्णा एकादशी के दिन (दि. 23-1-1971) दोपहर को करीब 1 बजे उपस्थित सन्तों और हरिभज़्तों को 'जय स्वामिनारायण' कहकर वे अपनी इच्छा से अक्षरधाम सिधार गए।

उनके शरीर को विमान द्वारा गोंडल लाया गया। पौष कृष्णा द्वादशी के दिन उनके शरीर का षोड़शोपचार पूजन करके अक्षर मन्दिर की बाँयी ओर विशाल खेत में उनकी देह का अग्निसंस्कार किया गया। उस समय देश-विदेश के हज़ारों हरिभज़्तों और बड़े-बड़े महानुभावों ने सहृदयतापूर्वक अपने आँसुओं से इस वात्सल्यमूर्ति संत को अन्तिम श्रद्धांजलि दी। (उनके अग्नि संस्कार के पवित्र स्थान पर आज विशाल योगी स्मृतिमन्दिर का निर्माण हो चुका है।)

31. योगीजी महाराज को क्या पसंद है?

योगीजी महाराज अपने जीवन के अंतिम पल तक वे मोटे खद्दर के कपड़े ही पहनते थे। सादगी और सेवा उनकी जीवनशैली थीं। वे हमेशा काष्ठ के पात्र में सभी भोजन-सामग्री मिलाकर उसमें अंजलीभर पानी मिलाकर ही भोजन करते थे। मिठाई या अच्छे पदार्थ बनते उस दिन उपवास कर लेना उनकी रुचि का विशेष तप था। उनका चेहरा हमेशा प्रेम भरी मुस्कुराहट से प्रसन्न रहता! छोटा-बड़ा कोई भी व्यज़्ति उनके पास आता, वे सबको प्यार से बुलाते, सभी का कुशल समाचार पूछते, सब को आशीर्वाद देते, सबके दु:ख दूर करने के लिए भगवान स्वामिनारायण को हमेशा प्रार्थना करते। 'स्वामिनारायण' महामंत्र की रटना उनके मुख से हमेशा चलती रहती।

योगीजी महाराज को बच्चों को बहुत प्यार करते थे। बच्चों को बुलाकर पास बिठाते और धुन गवाते :

'स्वामी और नारायण अक्षर और पुरुषोज़म ।
आत्मा और परमात्मा ब्रह्म और परब्रह्म ॥'

योगीजी महाराज बच्चों को बिठाकर उनसे भजन सिखाते। उनको कीर्तन और गुणातीतानन्द स्वामी के उपदेश से कुछ पंज़्तियाँ कंठस्थ करवाते। श्रीजीमहाराज और गुणातीतानन्द स्वामी के चिरित्रों की बातें कहते। भगतजी महाराज और शास्त्रीजी महाराज के प्रसंग सुनाते। पूजा और आरती करना सिखाते और प्रसाद देकर उन्हें खूब प्रसन्न कर देते।

योगीजी महाराज का उपदेश था कि 'हमें प्रात:काल होते ही बिस्तर छोड़ देना चाहिए। उठकर 'स्वामिनारायण' का स्मरण करना चाहिए। स्नान-ध्यान-पूजन से निवृज़ होकर ठाकुरजी को दण्डवत् प्रणाम करने चाहिए। शिक्षापत्री के कम से कम पाँच श्लोक पढ़ने चाहिए। तदनन्तर अपनी पाठशाला का अध्ययन अथवा अपनी व्यवसाय का काम करना चाहिए।'

'प्राथमिक-माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को कम से कम घर में प्रतिदिन चार घण्टे और महाविद्यालय (कॉलेज) के छात्रों को कम से कम आठ घण्टे अध्ययन करना जरूरी है। चोरी तो किसी भी हालत में कभी भी नहीं करनी चाहिए। माता-पिता के प्रति खूब आदर-सद्भाव

रखना चाहिए। उन्हें रोज़ सुबह प्रणाम करना चाहिए।'

'स्कूल तथा कॉलेज जाते समय हमेशा नि:संकोच तिलक करना चाहिए। मन्दिर, बाल मण्डल, युवक मण्डल में सत्संग के लिए प्रतिदिन नियमित जाना जरूरी है।' 'गुणातीतानन्द स्वामी का उपदेशामृत, वचनामृत और कीर्तन आदि धर्मशास्त्रों के मुज़्य सिद्धांतों को कण्ठस्थ करना चाहिए।' 'किसी की चीज़ को बिना उसके मालिक की इज़ाजत के कभी नहीं छूनी चाहिए। रास्ते में पड़ी हुई कोई भी चीज़, यदि वह अपनी नहीं हैं, तो नहीं उठाना चाहिए। झूठ का तो हमेशा के लिए त्याग ही कर देना चाहिए।'

'एकादशी का व्रत-उपवास नियमित रूप से करना चाहिए। दूध-पानी हमेशा छानकर ही पीना चाहिए। बीड़ी-सिगारेट कभी नहीं पीना चाहिए। नाटक-सिनेमा नहीं देखना चाहिए। हॉटल की और बाहर की खाद्य-वस्तुएँ कभी नहीं खानी चाहिए।' योगीजी महाराज को ऐसे संस्कारी और चारित्र्यवान बाल-युवक बहुत पसन्द थे। वे अपने उपदेशों में और भी कई अमूल्य बातें बताते थे...

32. योगीजी महाराज का उपदेश

(1) खाते-पीते, घूमते-फिरते, सोते-जागते प्रत्येक क्रिया में सतत भगवान का स्मरण करते रहें।

(2) कम से कम दो वचनामृतों और 'गुणातीतानन्द स्वामी का उपदेशामृत' की दस पंज़्तियाँओं का नियमित रूप से पाठ करें।

(3) कंठस्थ किए गए कीर्तन, वचनामृत और गुणातीतानन्द स्वामी का उपदेशामृत की पंज़्तियों का पुनरावर्तन करते रहें।

(4) हमें इकट्ठे होकर जगतभर की फालतू बातें मत करना, व्यर्थ समय गँवाने के बजाय ज्ञानगोष्ठी करें, कथावार्ता करें, भगवान और सन्तों की लीलाओं का स्मरण करें तथा महापुरुषों ने जो बातें कही हैं, उनका मनन-चिन्तन करें।

(5) लगातार अपने दोषों को मिटाने की चिन्ता करें। क्रोध को तो अपने पास आने ही न दें। महापुरुषों के समक्ष निष्कपटभाव-सरलभाव से पेश आए, ताकि उनकी कृपादृष्टि बनी रहे और हम निर्दोष हो जाएँ।

(6) ज्ञान प्राप्त करने से और सेवा करने से मनुष्य की प्रगति होती है। छोटी-बड़ी किसी भी प्रकार की सेवा में लग जाना चाहिए। कथा-वार्ता सुनने का व्यसन ही हो जाना चाहिए।

(7) *'नानक' नाने हो रहिए, जैसी नानी दूब ।*
घास-फूस सब उड़ गया, दूब खूब की खूब ॥
पानी के बहाव में अकड़कर खड़ा रहनेवाला पेड़ बह जाता है, लेकिन छोटी-सी दूर्वा, जो कि पानी का बहाव आते ही ढल जाती है, उस पर से चाहे कितना भी पानी बह जाए वह नहीं बह जाती। उसी तरह अभिमानी एवं अकज़्ड़ न बनें, किन्तु निर्मानी होकर, छोटी-सी छोटी सेवा में अपने आपको लगा दें। देहाभिमान न आने दें, तो हम उखाड़ नहीं सकते, सत्संग में स्थिर बन पाएँगे तथा सत्संग में देशकाल का व्यवधान नहीं टिकेगा।

(8) युवकों को आपस में संगठन, सहृदयता और एकता रखना आवश्यक है।

(9) सत्संगीमात्र को दिव्य-अलौकिक मानना। प्रत्येक हरिभज़्त में दिव्यभाव रखना। हमें जो संत के द्वारा भगवान का प्रकट स्वरूप मिला है उसे निर्दोष समझना, भगवान और उनके भज़्तों पर कभी दुर्भावना या अरुचि नहीं पैदा होने देना और किसीके अवगुण का चिन्तन तथा कथन नहीं करना।

(10) किसीकी दिल्लगी मत करें। न कभी ऊधम मचाएँ। हमें हमारा स्वभाव शान्त रखना चाहिए।

(11) दूसरों की क्रियाओं में तथा स्वरूप में दोष न देखकर अपने दोषों की छानबीन करनी चाहिए।

(12) सहन करना, वचन और शरीर का कष्ट सहने के लिए तैयार रहना। जो भज़्त कष्ट सहता है, उस पर भगवान तथा सन्त दोनों प्रसन्न रहते हैं।

(13) जहाँ कहीं, जैसा-तैसा, जो भी मिल जाए, उससे काम चला लेना। किसी वस्तु का आग्रह करके कभी झगड़ा पैदा नहीं करना चाहिए।

(14) हमें आग जैसा होना चाहिए, पानी जैसा नहीं। आग में जो भी रंग ड़ालो, वह आग के रंग का ही हो जाता है। पानी में रंग डालने पर

तुरन्त पानी का रंग बदल जाता है, पानी दूसरे रंग से स्वयं रंग जाता है। हम अपने रंग से औरों को भले ही रंग डालें, परन्तु हम दूसरे के रंगों से रंग न जाएँ इसका खयाल रखना।

(15) हम शहर में भले ही रहें, लेकिन हमारी नज़र संयम में रहनी चाहिए, शहर का कोई दोष हमें न लग जाए इसका खयाल रखना। शहर में कई प्रकार के भले-बुरे प्रलोभन होते हैं, उनसे बचना चाहिए। हमेशा मन्दिर में जाकर प्रार्थना, पूजा-आरती करनी चाहिए, भगवान और सन्तों को प्रसन्न रखने के लिए उन्हें प्रधानता दे, ताकि शहरी जीवन का कोई दोष हम में प्रवेश न कर सके।

(16) साधु बनें, साधुता सीखें, स्वभाव सरल बनाएँ। साधुता का मतलब है - क्षमाशीलता-सहनशीलता। स्वभाव ऐसा मधुर होना चाहिए, जिससे लोगों पर अच्छा असर पड़े।

(17) दास का भी दास होकर रहना, यही सबसे ऊँचा पद (डिग्री) है। जूठे पज़ल उठाना, बरतन माँजना, हरिभज़्तों के कपड़े धोना, मन्दिर के पाखाने साफ करना, चौके की सफाई करना आदि काम कर लेने चाहिए। बड़े साहब बन जाने पर भी ऐसी सेवा हमेशा करते रहना चाहिए। यह मोक्ष की साधना है, यह जरूर सीखनी-करनी चाहिए।

(18) अहिंसा और ब्रह्मचर्य का पालन हमेशा हृदय से करना चाहिए, अपनी आत्मा के विषय में 'मैं गुणातीत हूँ, अक्षर हूँ, ब्रह्म हूँ' ऐसा समझना।

(19) धाम, धामी और मुज़्त ये तीन शाश्वत (नित्य) हैं, श्रीजीमहाराज पूर्ण पुरुषोज़म हैं, सर्व अवतारों के अवतारी हैं, कर्ता, साकार, सर्वोपरि और प्रकट हैं। गुणातीतानन्द स्वामी मूल अक्षरब्रह्म हैं, महाराज के रहने का धाम हैं और प्रकट सत्पुरुष मोक्ष का द्वार है, इस बात पर पूरी श्रद्धा रखनी चाहिए, दृढ़ता रखनी चाहिए।

33. पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज

संवत् 2026 में (सन् 1950) अहमदाबाद में ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज ने अपने स्थान पर 28 वर्ष की उम्र के युवान संत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी को अपना उपवस्त्र ओढ़ाकर 'बोचासणवासी श्री

अक्षरपुरुषोज़म स्वामिनारायण संस्था' (बी.ए.पी.एस.) के अध्यक्ष पद पर नियुज़्त किया और उनकी आज्ञा में रहने का हरिभज़्तों को आदेश दिया। तभी से सब उनको 'प्रमुखस्वामी' के नाम से पहचानने लगे।

योगीजी महाराज ने इस घटना को अपने शज़्दों में इस प्रकार दर्ज किया है : 'स्वामीजी ने नारायणस्वरूपदासजी के उपर कृपादृष्टि की कि मुझे इनको ही संस्था के प्रमुख पद पर नियुज़्त करना है। यह विधि अहमदाबाद में हुई। उस समय मैं पास में ही बैठा था । स्वामीजी ने मुझे आदेश दिया, तुम इनके सर पर हाथ रखो, जिससे तुम जैसे गुण इनमें आएँ। मैंने उनके सर पर हाथ रखा, तब स्वामीजी बोले कि आपने हाथ रखा, तो मान लो मेरा भी हाथ आ गया। इस प्रकार प्रमुखपद दिया गया, जिससे स्वामीजी बहुत प्रसन्न हुए।'

उसी दिन से योगीजी महाराज के आदेश के अनुसार प्रमुखस्वामी महाराज हमारी संस्था एवं सज़्प्रदाय की निरन्तर सेवा करते रहे हैं। उनकी 48 वीं जन्म जयन्ती मुंबई में हरिभज़्तों ने बड़ी धूमधाम से मनाई, तब योगीजी महाराज ने कहा था, 'प्रमुखस्वामी की बाल्यावस्था में ही शास्त्रीजी महाराज की उन पर कृपादृष्टि पड़ गई थी। उनकी प्रमुखस्थान पर नियुज़्ति की, सत्संग की कितनी श्रीवृद्धि हुई! कैसे साधुओं को दीक्षा दी! सबको प्रमुखस्वामी की आज्ञा का पालन करना चाहिए, प्रमुखस्वामी तो शास्त्रीजी महाराज का प्रकट स्वरूप हैं, उनमें और प्रमुखस्वामी में तिलमात्र का भी फ़र्क नहीं है, ऐसा दिव्यभाव रखिए, हमको सात सौ साधु बनाने हैं। यह कार्य प्रमुखस्वामी के द्वारा सज़्पन्न होगा' ऐसी भविष्यवाणी प्रमुखस्वामी महाराज के विषय में योगीजी महाराज ने पहले से ही कह दी।

अंतिम बीमारी के दिनों में योगीजी महाराज ने भज़्तों से कहा था, 'प्रमुखस्वामी मेरा सर्वस्व हैं। आप सबको अब इनके द्वारा सुख मिलेगा।'

आज प्रमुखस्वामी महाराज हमारे गुरुहरि, प्रकट ब्रह्मस्वरूप एवं मोक्षदाता गुरुहरि हैं उनकी प्रसन्नता के लिए हम सब उनकी आज्ञा का यथार्थ पालन करें।